वर्षो घ[illegible]वा मनहीमें यहभावसों नित्य गुनावें ॥ कपोजर
२-१ चित्रकरतहें ॥ सोरमनमें नष्ट छतदंत छूत जीताएकी
र्त्तनचारस्वारास्वांमिनीको भाव ॥ तथ्यो चारोसरूप
विहारमें हें उनकी सखी गावतहें ॥ बाजाभक्तनके आ
भरनबाजतहें ॥ श्रीजी हूं बेनु बजावतहें ॥ श्रावनसु
दि ३ ॥ के दिन चुंनडीकी पाग पिछोरा अभ्यंग श्री
स्वांमिनीजीके ह्यां झूलेहें और निकुंजमें झूलतहें ॥
तहांप्रभु पधारतहें ॥ तादिन श्री स्वांमिनीजी दांनप्र
भूकों करतहें ॥ श्रीगोवर्द्धन परती जकों चों तराहें त
हां ठकुरांनी तीज मांनी हें ॥ सगरी रात्र विहार अनेक
प्रकारको गोप्यहें ॥ सब दिन सब रीतमें तहां रमनहें ॥
॥ तातें श्री आचार्यजी महाप्रभू श्रीजीको प्रथम तहां
दूं पधराएहें मध्यांनकों सेया भोगमें नई सामिग्री धर
तहें ॥ स्वांमिनीजी अपने मनोर्थ करहें ॥ मनोहरको
लडुवा तथ्या पूवा आबरपवूंदी सकरपारा ॥ सांवर
नसुंदी ॥ ११ ॥ पवित्रा एकादसी ॥ तारा विश्री महाप्रभू

जी छोंकरनी चें पोढें रावल अपनो जन्म भूमि हें ता ॥
औरदे षतहें श्रीगोकुलमें प्रभुसंगरमणहें ॥ तहांभा
वासकसे ज्यापरपोढेहें ॥ तासमय देषी जो वनके
उद्धारकी चिंता मिस विरह भयो ॥ तब प्रभु पधारे ॥
ताही समय मधुराष्टक कहे ॥ याभावसों रमन किए
तब वचन श्रीजी दिए ॥ जो जाकों सरन करेंगे ता
कौ अंगीकार करोंगो तब पवित्रा पहिराएके स
मरेंगे ॥ २ ई. ॥ तारको ॥ मिश्री श्री स्वांमिनीजी रूप अ
पनो अधरामृतरस पांन कराए ॥ पाछें तांबुलबीरी
चर्वित अरोगाए ॥ तब श्री अपनो उपरनो उढाए ॥ पा
छें द्वादसी के दिन दांमोदरदास आदि सब सेवक श्री
महाप्रभूजीको पवित्रा पहिराय अपने पतिकों वर
न किए ॥ चारो नित्य सिध्याके भावतें चार रंगके ॥ पा
टके हूं धरतहें ॥ बीचबीच फोंदना भक्तनके आभू
षनके फोंदनाहें ॥ पवित्रा भुजाहें बीच बीचमें आं
कदारहें ॥ सो कुच स्थांनीहें ॥ सो प्रभुके हृदयसों धरा
ली

हिंडो बतहैं पिछवाई हिंडोरामें लगावतहैं ॥ सो भक्तदसो-
२०.२ दिखावे खिलहोइरहेहैं भद्रानहोइ तासमय पहिरें ॥ उ
पवास ब्रतहोइ तादिन अभ्यंग कुल्हे पिछोडा साडी-
सब तसुं नहरी किनारी ॥ गोपिवल्लभसे बवडा धाधि
कें ॥ पवित्रा राखी कोसंग अधिवासन होइ ॥ पवित्रा
भक्तरूप ॥ राखी सनेहरूप भक्तनके नेत्ररूप बरनमा
लापहिराएरा खिसोपानि ग्रहनहैं ॥ तातें दृढकरि
बांधें चंदनके छींटाडारि तुलसी धरि धूपदीप भो
ग आरती ॥ भगवतश्री पुरुषोत्तमस्य पवित्राधिवा
सनं ॥ रक्षाबंधनार्थ सौं भला छिवासनं करिष्ये ॥ बांधे
प्रभु पहिरे ॥ पीछें मिश्री भोग आरती मोतीकी ॥ ॐ
भद्राटारि राखी बांधें अभ्यंग पाग पिछोडा हरदी या
कहूं कुल्हे पिछोडा कसूंभल ॥ राजभोगमें सेवबडा-
धाधिकें ॥ थारमें कुंकुम कुंमपोरें अछितबीडा २ रा
खी सिद्धिकरि माला पहिराय तिलक अछितकरि
नंदरायजीके भाई सुत्राई बेटी हैं मानकुंमरि ॥ एक-
६२ श्री भन्चनके भाव श्रावणसुदी १५

नंदरायकेंबडे उपनंद तिनकी बेटी हैं ॥ दूसरी सहोद्राहैं
सेवा घेपीछें प्रोहितबांधें ॥ बीडा २ धरें श्री चंद्रावली
जी भुगलसरूपकों बांधतहैं ॥ गुडपापडी मिठाई भोग
धरें सिज्यामंदिरमें ॥ मिश्री धरें आरती मोतीकी ॥ ता
दिनतें श्रृंगार पाछें खेलें ॥ कहूं पवित्रातें खेलें राधा
अष्टमी ताई खेलें पीछें महूर्त होइ भाद्रपदवदि ७ ॥
जो उतरें ॥ श्रृंगारसमय आछो होइ तो श्रृंगार समय
उतरें ॥ मोतिकी आरती परिछमो उतरें तादिन डोल
की तनि
कै तय्यारी होरि के गाईये ॥ डोलसो उतरें लव हिंडोरा
के गाईये ॥ राई लोन उतारि न्यौछावरि करें ॥ पाछें
हिंडोरा वाही दिन बडो करें ॥ भाद्रपदवदि १ पाग पि
छोरा कसूंमल ॥ राजभोगमें कडूसा मिश्री सेंनभोगमें
पूरी सीरा पाके धामासो ठकी बूंकनी ॥ पवित्रामें तार
३६० ॥ नित्य नयेवस्त्रके भावतें ॥ तथा ३६० दिनमें-
बर्ष दिनलों सेवा नवनी होइ ॥ यहसेवाको मार्ग है ॥ ता
तें पवित्राकी सेवामें बरसदिनकी सेवा सिद्धि होत हैं

पवित्रा सिश्री सगरी सामिग्री कों आधिदैविक रूपहै ॥ प
२-३ वित्रा मुख्यसूत्रकों पूरो श्री स्वामिनी जी के भावतें ॥ पा
टको पवित्रा पूर्वति कुंमारिका आई है ॥ तातें कुंमारि
का के भावतें ॥ बादलेको पवित्रा श्री यमुनाजी के भा
वतें फूलफूलाटरूप ॥ हरी तथा आसकदार श्री चंद्राव
लीजी के भावतें ॥ रंगीन पीरो श्री स्वामिनी जी के
भावतें ॥ स्यामश्री यमुनाजी के भावतें ॥ लालश्रु तिरू
पाके भावतें ॥ हरयो कुंमारिकाके भावतें ॥ स्वेत उज्ज्व
ल निर्विकार स्नेह इत्यादिक भावतें प्रभुको पवित्रा
प्रथम पहिरावें ॥ भेटकरें ॥ पाछें गुरूके उपरते दूसरो
पवित्रा पहिराय भेटकरे ॥ तथा दोऊ पवित्रा दूसरा
यके पीछें भेटकरें जो प्रभूको नधूरल होइ तो ॥ दूस
रे जो धुवत होइ तिनको देइ भेटकरें सो गुरूके स्वा
जाय यह मुख्य है ॥ तथा श्री नाथजी को जाय ॥ अ
हूं रात्रिको आज्ञा नहीं सो यातें मर्यादामें दिवस उत्त
म है ॥ पुष्टिलीलामें दिवस मध्यम है ॥ भक्तनको दिर

हहैं ॥ रात्रको संयोग है ॥ तातें उत्तम उत्तम है ॥ यह तो
नरात्र एक है ॥ जन्माष्टमी की रासकी ॥ और पवि
त्राकी ॥ इत्यादिक भाव है ॥ १ ॥ राखीबंधन है ॥ कहूं मु
कवहै ॥ जालपाटकी राखी ॥ यातें वर्षा ऋतु रसरूप
है ॥ तथा अर्पित ग्रहणहै ॥ तातें अनुरागरूप है ॥ गुडपा
पडी भोग ॥ सो चूंनश्रुतिरूपा ॥ जलश्री यमुनाजी घी
श्री स्वामिनी जी कों स्नेहरूप ॥ गुड कुंमारिका तथा सखी
ई कुंमारिका ॥ या पक्षके अनुसार ॥ राग सारंग ॥ राखी द
बांधत लाल विहारी, अति सुरंग विचित्र नानारंग
ललनां सुहृथ सवारी ॥ १ ॥ जैसी प्रेम प्रवाह विहारिन
ललिता लेसनकारी ॥ कुंदनसहित जराइ जगमगे बां
धत प्रीतम प्यारी ॥ २ ॥ अति अनुराग परस्पर दोऊ जा
न रहे निहारि निहारी ॥ कृस्नदास दंपति छवि निरख
त अपनो तनमन वारो ॥ ३ ॥ अब ग्रहणको भाव लिख
तहैं ॥ श्री स्वामिनीजी कों माछोमान है ॥ तातें मान दा
य समय होत है ॥ राजभोग पीछें कुंजमें सो सूर्य ग्र

पत्रि हण ।। ताकों श्रुतिरूपा बहुत मानत हैं ।। तातें चंद्रग्रहण
२:४ या मास स्त्री न सूर्य जाम चतुष्टयं ।। चारि प्रहर पहि
लें मानत हैं ।। चंद्रग्रहणसें न पीछें मानत हैं ।। सो कुमा
रिका मानत हैं काहेतें रात्री हैं ।। तहां तीन प्रहर भूषि रह
त हैं ।। प्रभू को प्रहर १ ।। पहिलें सखडी ।। चारि घरी प
हिलें अनसखडी ।। दोय घडी पहिलें दूध को ।। सम सामग्र
य पर जल हूं नाहीं रहत ।। सो यातें श्री यमुनाजी हूं
प्रभु को विरह जानि मना डूबे जात हैं ।। उष्णकाल में
त कें चोला उपरनो कोरे प्रभु पहिरें ।। सी तकाल में
पाट के पहिरें ।। पाट के कुमारिका के आवत ।। इतने
श्रुतिरूपा के आवतें ।। प्रभु को न तन के वस्त्र बहुत अ
ये हैं ।। सो अत्यंत विरह करिकें सर्वत्याग कीयो हैं ।। को
र अपर सब छै हैं ।। विरह को मौन काहू को जनावनो नां
हीं हैं ।। तातें काहू को छुवत नांहीं हैं ।। श्रुतिरूपा कुमारि
का मानादिक को गान करि प्रभु कों सुनावत हैं ।। यह अ
वलंब सो प्रभु बचे हैं ।। नांहीं तो मूर्छित होइ जाइ अपर

लका छत हैं ।। सो श्री स्वामिनी जी विनां सगरी सामग्री
को त्याग ।। पावें नई सामग्री श्री स्वामिनी जी फेरिकें
कराये श्री चंद्रावली जी तथा कुमारिका सो प्रभू सहि
त आरोगत हैं तब झारी धरत हैं प्रभु पास श्री यमुना
जी आवत हैं प्रभू को दुःख श्री यमुनाजी सों देख्यो
नांहीं जात हैं ।। विरह छूटत हैं ।। तब फेरिकें सगरो ने
गसु करत हैं श्री स्वामिनी जी के रस सों न्हात हैं ।।
दान करत हैं ।। जो आज्ञु महा दुःख तें छुटकारो भयो हैं
मूहूर्त्त अस्त होत हैं ।। तब मान तो छूटत हैं ।। पर
तु श्री स्वामिनी जी प्रसंन नांहीं हैं ।। तातें प्रसंन कर
नार्थ श्रुतिरूपा कुमारिका व्रत उपवास करत हैं ।।
प्रभू कों भूषें जानिकें श्री स्वामिनी जी कों संग लेंक
बहू अनसखडी कबहूं सखडि आरोगावत हैं ।। चंद्रमा
सूर्य देषिकें नयो जल आवत हैं ।। तब सखडी होत हैं
तातें काहू मंदिर में प्रभु आरोगत हैं ।। प्रसादी चंद्रसू
र्य देषिकें लेत हैं ।। सो यातें जो श्रुतिरूपा कुमारिका

पवित्रा नांहीं लेतहें ॥ प्रभुकों मन लेवेकों नांहीं हें ॥ परंतु श्री
२·५ स्वांमिनीजी कहें सो करनो मलि कहूं पे रिमांन होइ
याते लेतहें ॥ ग्रहणके मध्य प्रभू दांन करतहें एक
अंन्न रोक ॥ विष्णुरात्रौ इत्यादि श्रीमन्नंदराजकुमा
रस्य राहु जनितं अरिष्ट निवृत्यर्थं यथानामगो
त्राय ब्राह्मणाय दातुं अहं समुत्सृजे इति जल अप्र छ
त छोडिये ॥ अलिरूपा कुंमारिका दांन करावतहें ॥ ह
मारो तथा प्रभुको पुण्य सहाय होइ कोई प्रकार मांन
छूटे ॥ प्रभुकों मायो कवहूं उघारो नांहीं रहत ग्रहण
में मायोहूं उघारि के प्रभु बेठतहें अपरसमें श्री
स्वांमिनीजीको जप करतहें ॥ अलिरूपा कुंमारिका
सो कहतहें ॥ वेणीमांन छुडावो ॥ नांहीं तो मेंहूं सब छो
डिके वेरागी होउंगो ॥ पाछे अलिरूपा पाग ले श्री
स्वांमिनीजी सों सगरो प्रकार कहतहें प्रभु या प्रका
र विरह करि दुषी हें कोंहूं क्योंहूं उपाय करिके ॥ मा
नतहें तब न्हायके पाग बांधिके ग्रहस्त होतहें ॥ ता

तें पुष्टिमार्गमें ग्रहणको वहुत ही मानतहें ॥
सव व्हार कारो घर मिलावतहें सो याते ॥ औरनाइका
को रमणरसोई में भंडारमें दूधघरमें सागघर पांन
घरमें यह सगरे कुंज हें ॥ तहां को रमणगोप्य करना
र्य ॥ श्री स्वांमिनीजी के भयतें जांगहें पात्र वस्त्र सव
स्पर्श करतहें ॥ इति श्री गोकुलनाथजी कृत
तथा श्री वल्लभजी कृत उत्सव विधि वर्णन ॥
संपूर्ण ॥ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ श्री गो
कुलनाथजी कृत रहस्य भावना लिख्यते ॥
पुष्टिमार्गमें जितनी क्रिया हें सो सव श्री स्वांमिनीजी
के भाव तें हें ॥ तामें मंगलाचार गावे ॥ प्रथम श्री स्वा
मिनीजी के चरणकमलकों नमस्कार करतहें ॥ तिन
की उपमा देवेकों मन दसों दिसा दोर्यो परंतु हूं ॥ पा क
यो नांहीं ॥ पाछें श्री स्वांमिनीजी के चरनकमलको
आश्रय मन कियो हे ॥ तव हृदयमें उपमा स्फुरिभ
ई जेसें श्री ठाकुरजी को अधर बिंब आसक्त हें र

सरूपतैसेंही श्री स्वांमिनीजी के चरनकमलकों नम
स्कार करत हें ॥ सो श्री स्वांमिनीजी के चरणकमल
अत्यंत आरक्त कोमल हें तिनकी उपमा देवे कों
मन दसों दिसा दौरयो ॥ परंतु पायो नाहीं ॥ पाछें श्री
स्वांमिनीजी के चरनकमलकों आश्रय कियो ॥ त
ब उपमा हृदयमें स्फुर्ति भई ॥ जेसें श्री ठाकुरजी के
अधर बिंब आरक्त हें रसरूप ॥ तेसेंही श्री स्वांमि
नीजी के चरनकमल हें तिनकों में बारंबार नमस्का
र करत हों ॥ तिनमें अनवट बिछियां नूपूर आदि
आभूषन हें ॥ सो चरनके संबंधतें आभूषनकी
सोभा होत भई ॥ एसें परम सुंदर चरनमें दस अंगु
लिनमें तिनमें दस प्रकार हू भक्ति आइके आश्रय कि
यो हें ॥ तातें श्री स्वांमिनीजी के चरणकमल परम
फलरूप हें ॥ जो कोई इन चरनकमलकों आश्रय
करें ॥ तिनके पीछें दसो प्रकारकी भक्ति लागी डो
लति हें ॥ तातें भावनामें प्रथम श्री स्वांमिनीजी

के चरनकमलकों आश्रय कीयो हें अब चरणक
मलमें पंद्रह चिंन्ह हें ॥ तिनकों अपनी बुधि अ
नुसार भावसहित बरनन करत हें ॥ तहां प्रथम द
छिन चरनके चिंन्ह बरनन करत हों ॥ ताको भावप
हु हें ॥ जेसें श्री ठाकुरजी के वांम अंग पुष्टि हें
॥ तातें दछिन चरन चिंन्हको पहलें बरनन करत
हों ॥ प्रथम दछिन चरनमें छत्रको चिंन्ह हें ॥ ताको
अभिप्राय यह हें ॥ श्री गोवर्द्धननाथजी सगरो अ
वतारादि सुर असुरन रगोनी गाइंद्रादि ब्रह्मा
दि शिवादि ॥ तथा श्री रामचंद्रजी के अवतारा
दि सबनके माथे पर सबनके सिरोमनि सबन
के अवतारी भूत सबनके रक्षा कर्ता एसें पूर्ण पू
रुषोत्तम हें ॥ तिनहूं के ऊपर श्री स्वांमिनीजी के
पुरषोत्तमकी रक्षा करत हें ॥ तातें छत्रको चिंन्ह
चरनकमलमें धरे को ॥ यह जतायो पूर्णपुरुषो
त्तमको जो या छत्रके नीचें आवतें सगरोसु

भाव: षट्मिलेगो॥ सगरेमनोरथ पूरणहोइगो॥ मानरूपवि
२-७ रहतापमें यही छत्र छायाते रछाहोतिहैं॥ ताते
जोकोई छत्रको आश्रयकरे तिनको विनोजतन
प्रभु छत्रनीचे आपुते आइरहेंगे॥ याते छत्रको
चिंतवन सदा कर्तव्य है॥१॥ दूसरो चक्र चिन्ह
कहतहैं॥ चक्र अत्यंत तेजस्वी पुरुषहोइ॥ तिन
के पासरहे॥ तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी के ऊपर चक्र
हैं धुजापास और प्रभुहस्तमें राषतहैं॥ ताते सिवके स
गरे देवता इंद्रादि ब्रह्मादि सिवादि असुरनाग[illegible]
कके चंद्रसूर्य अग्निवायु समुद्र सब[illegible]
आज्ञा अनुसार रात्रिदिवस चलें जातहें॥ तैसे ही
श्रीस्वामिनीजी अपने चरणकमलमें चक्र राषिके
श्रीठाकुरजीकों अपने बसकरि लीनें हैं॥ सगरी स्वा
मिनीकों वसकिए॥ तातें श्रीस्वामिनीजीके संबंध
विना कहूं विहार नांहीं हैं॥ और अंबरीष परदुर्वा
साकोप कियो॥ तब अंबरीषकी रक्षा प्रभुचक्रसों

किए॥ तैसेंही मानी हिरदु:षतें प्रभु मनाइमस्तक
चरनमें चक्रहें॥ तिनकों नमनकरतहों॥ तव चक्र श्री
स्वामिनीजीके मनको फेरतहें॥ तव मान छोडिकें प्र
भुसों परस्परहोतहें चक्रको चिंतन करें भगवततें
जबतें॥ भगवद्भाव उत्पन्न होई॥२॥ अब तिसरें
चिन्ह धुजाको हैं॥ ताको भावकहतहें श्रीगोवर्द्धन
धर [illegible] को जीतिके धुजा बांधीहै॥ तातें
मनमें बडो अहंकार भयो॥ तव श्रीस्वामिनीजी
अपने सौभाग्य बलतें श्रीगोवर्द्धनधरकों जी
तिकें अपने चरनमें धुजाको चिन्ह धारन किए
॥ ताकरि श्रीठाकुरजीकों यह जताए जो धुजा ऊ
पर है सो धुजा हमारे चरनमें है॥ तातें जैसें श्रीगो
वर्द्धनधरकी धुजाके आश्रय रहेतें कालकर्म मा
याके गुन तथा जमदंड तथा भक्तिरसके प्राप्तिमें
अंतराय कछून लागे॥ तैसेंई श्रीस्वामिनीजीके
चरनकमलके धुजाचिंन्हके चिंतनतें श्रीठाकु

भाव:
२८

रजी की निकुंजलीला में काहू को सामर्थ्य नाहीं है ॥ जो
प्रतिबंधक रसके आरकी कहांहे श्री स्वामिनी जीके
आश्रयतें श्री गोवर्द्धनधरहू प्रतिबंधन करि सके ॥ श्री
रत्नहू जितिके मनोरथमें सहाइ अनकुल होइके जीव
नके मनोरथ पूरन होत हैं ॥ काहेतें श्री स्वामिनी जी के
चरणकी भुजानी चैं सगरी स्वामिनी हैं अपने मनके
भाव करिके ताही तें सगरी स्वामिनी को श्री ठाकुरजी मि
लिके विरहताप दूरि करत हैं ॥ तातें श्री आचार्यजी के
चरणकी भुजाके आश्रयतें सर्वोपर पुष्टिमार्ग के
फलताकी प्राप्ति निश्चय होइ यामें संदेह नाहीं ॥ अ
ब श्री स्वामिनी जीके दक्षिन चरनके मध्य को चापको चि
न्ह ॥ तिनको भाव कहत हैं ॥ सृष्टिके आदि समयमें क्षी
रसागरमें प्रभु शेषजीके ऊपर पोढे हैं ॥ ता प्रभु की ना
भि कमलतें ब्रह्मा प्रगट भयो ॥ तब प्रभु अपनी इच्छातें
ब्रह्माद्वारा सृष्टि प्रगट किए ॥ तामें अनेक नदी पहा
ड वन चौदह भुवनकी रचनादि पाई ॥ तैसें ई हां श्री स्वा

मिनीजी के चरणकमलमें राखिके अपनी श्री विरसरू
प प्रगट कीए ॥ समस्त ब्रज वृंदावन वन उपवन निकुंज
श्री यमुनाजी गिरिराज अनेक पशु पंक्षी स्वामिनी
के रूप सखी अनेक भावात्मक रसात्मक सबकी सृ
ष्टि प्रगट कीए ॥ यह कहिके ॥ यह जताए जो एक श्री
स्वामिनी जी के चरनकमलको चिंतन करे तो समस्त
ब्रज वृंदाबन श्री यमुनाजी गिरिराज ब्रजकी लीला
निकुंजादिककी लीला श्री ठाकुरजी सहित हृदयमें आ
य प्रभु अपने रसको दान कृपा करि प्रसंन होइके करें
॥ ताही तें ब्रजकमलाकार है ॥ श्री ठाकुरजी को प्रानहू
तें अत्यंत प्रिय है ॥ सो दामोदरलीला प्रभु करी तब य
सोदाजी सो बंधाए ॥ सो ऊखल सूं के दाम सो बांधे ॥ ता
करि यह भाव जताए जो मैं ब्रजके रूख के दाम सो बंध्यो
हूं और मैं हरें ब्रह्मादिक लख्यो ब्रज भक्तनके बस हों ॥ यामें क
हा कहनो ॥ तातें ब्रजमें मोर सूं आगा य गोप पशु पं
क्षी लता वन ब्रज संबंधी सब श्री ठाकुरजी को प्रानहू

भाव: ते अधिक प्रिय है ॥ सो याते श्री स्वामिनी जी के चरन॰
२८ कमलतें रसरूप पदारथ प्रगट भयो है ॥ या प्रकार श्री॰
स्वामिनी जी अपने चरनकमलमें रसरूप पदार्थ रा
खिके श्री ठाकुर जी को यह जताए जो तुम ब्रजचोरा
सी कोसमें रसको अनुभव कहा लों करोगे ॥ तातें में अ
पने चरनकमलमें सगरी ब्रजकी जो लीला राखी हे जो प
दारथकी इच्छा होइ सो यह चरनकमलमें सगरो है ॥ त
ब श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनी जी के चरनकमलमें सग
री ब्रजकी लीलाको अनुभव कीए ॥ तातें श्री स्वामिनी
जी के चरनकमल पर मांथौ धरि अनेक भावलो भा॰
न मनावत हे ॥ तातें श्री स्वामिनी जी के चरनकमल हे सो
सर्वरसानुभावरूप हे ॥ ४ ॥ अब श्री स्वामिनी जी के द॰
छिन चरनमें जवको चिन्ह हे ॥ ताको भाव कहत हे ॥ जो रा
त्रिमें नाप्रकारके साधन भक्ति हे ॥ सो नौदिन ताई देवी
पूजनके मिस करि अपने अपने भावको श्रृंगार बागा
सामिग्री अंगीकार करायके दसहराके दिवस जव॰

श्री ठाकुरजी के मस्तक पर धरिके ॥ यह जताए जो श्री॰
स्वामिनी जी के चरनमें जव हे ॥ ताते यह भाव प्रगट भ
यो जो दसो प्रकारकी भक्ति चरनके जवमें प्रगट भई है ॥
और श्री स्वामिनी जी अपने चरनमें दस अंगुरी हे ॥
॥ ताके भावतें जवारा दसो अंगुरी श्री ठाकुरजी के ऊपर
धरिके श्री ठाकुरजी को नौधा भक्ति और प्रेमलक्षना
अपनी निकुंजसंबंधी पुष्टिरसरूप दीनी ॥ तातें श्री
ठाकुरजी प्रसन्न होइके जवारा अपने मस्तक पर धर
त हे और हूं भाव कहत हे ॥ जवको चिन्ह याते हे जो ज
व हे सो सगरे अन्नको आधिदैविक हे ॥ ताते जज्ञमें
होम करत हे ताकरिके ॥ यह जानीजो ॥ जवके श्री तर॰
चांवर हारगहूं चना सगरी सामिग्री हे ॥ ताते श्री स्वा॰
मिनी जी अपने चरनकमलमें जवको चिन्ह धरिके स
गरी सामिग्री हूं जवतें सिद्ध हे ॥ ताते श्री गोवर्द्धनध
र सर्वरसके भोक्ता हे ॥ ताते सगरी सामिग्री जवके चिन्ह॰
तें अनुभव होत हे ॥ ताते जो कोई जवके चिन्हको अ॰

भाव अपने हृदय में चिंतन करत हैं ते यह लोक संबंधी पा
२१ न पानो दिक आदि करि अत्यंत सुख पावें ॥ और पर
लोक में श्री ठाकुरजी के निकट संबंधी प्रेम लक्षना
भक्ति ताकी प्राप्त होइ ॥ श्री ठाकुरजी को रहनत्त अत्यं
त प्रिय है ॥ काहे तें जब के चिन्ह ते श्री ठाकुरजी कों
भोग सिद्धि भयो ॥ ताकरि के श्री स्वामिनी जी के चर
णारविंद को वारंवार पलोटतु हों ॥ सो पद ॥ राग के
दारो ॥ चोंपत चरन मोहन लाल ॥ पलिका पौढी कुंव
रि राधे नागरी नव बाल ॥१॥ कबहूं लेत लै नैनन सिरावत
कबहूं लावत भाल ॥ नंददास प्रभु की छबि निरखत प्रे
म के प्रतिपाल ॥२॥ या प्रकार श्री ठाकुरजी को मत कुम्भा
इ रह्यो है ॥ ताते जब को चिन्ह परम रसरूप जानि भगव
दीय अपने हृदय में धारन करें ॥५॥ अब छठो अंकुस
को चिन्ह है ॥ ताको भाव कहत हैं श्री गोवर्द्धननाथ जी
निरंकुश महस्ती हैं ॥ आप मदोन्मत्त होइ के समस्त
व्रज में नंद यसोदा सखा गाइ पसु पंछी व्रक्ष नदी

श्री यमुनाजी गिरिराज चैतन्य आदि सबन कों मन
अपनी सुंदरता तें हरे ॥ या छें व्रज को सगरी गोपी व्रज
भक्त तिन हूं को चित्त हरि लीयो ॥ सो सगरी गोपिन हूं
को धीरज लज्जा ग्रह कारज सब छूटि गयो ॥ श्री ठाकु
रजी के प्रेम में मंद हसन में नैनन कटाक्ष के वस होइ
श्री ठाकुरजी के संग मूलन लागी ॥ ताकरि के श्री ठाकु
रजी उन्मत्त हस्ती की नांई अत्यंत गर्ववंत भये ॥ तब
श्री स्वामिनी जी ने जानी जो श्री ठाकुरजी सगरे व्रजभ
क्तन को जीति के अत्यंत गर्ववंत भए हैं ॥ तब अंकुश
को चिन्ह धरि श्री स्वामिनी जी अति निरंकुश श्री ठा
कुरजी उन्मत्त गजराज हते ॥ तिनकों वस करत भए ॥ का
हे ते हस्ती एक अंकुश ही तें वस होत है ॥ या भाव तें अं
कुस चरण में धारण करि यह जताए जो सगरे व्रज
कों बस करि उन्मत्त भए ॥ परंतु इहां तो चरणारविंद में
अंकुस है ॥ ताही करी चैं सदा रहोगे ॥ या प्रकार अंकु
स धरि श्री स्वामिनी जी अपनो सौभाग्य प्रगट क

भाव॰ ऐसें भई अंकुसाको चिंतन पुष्टिमार्गमें जो भगवदी-
२११
य करे ॥ तिनके हृदयमें विना साधन आपुही तें श्री
ठाकुरजी आय रहें ॥ श्री स्वामिनीजी के चरनके चिं-
तन विना और कोई उपाय श्री ठाकुरजी के वस करि-
वेको है नांहीं तातें अंकुसाको चिंतन करिके जीवहू
को मन अत्यंत दुष्ट अभिमानी गर्व करिके है ॥ सो सु-
दर भगवदीय है जाइ प्रभुकी जो तामें मन लागें ॥ तातें
अंकुसाको चिन्ह निश्चय स्मरण कर्त्तव्य है ॥ ६ ॥ अब
दक्षिन चरनमें ऊर्द्धरेषाको चिन्ह है ॥ सो लंबी [illegible]
आकार है ॥ सो यातें जो श्री गोवर्द्धन है सो सगरे व्रजके
सुखदेन प्रगटे हैं ॥ तातें सात दिन इंद्र जलसों रक्षा करि
सवनकी सामग्री आरोगी और श्री यमुनाजी सगरे
व्रजके सुखदेन अर्थ प्रगट भई सो श्री गिरिराजहू लं-
बे हैं और श्री यमुनाजीहू लंबी हैं तैसई ऊर्द्धरेषाहू लं-
बी पुष्टिमार्गमें जनसेवीवत है ॥ तातें जो कोई पुष्टिमार्ग-
के रसको अनुभव चाहै तो श्री स्वामिनीजी के च-

रन चिन्हकी ऊर्द्धरेषाको स्मरण करे तो कबहू मार्ग-
तें गिरें नांहीं ॥ सदां ऊर्द्धगति होइ तथा ऊर्द्धरेषाके-
मिस सगरो व्रज अपने चरनमें राखे ॥ गिरिराज-
श्री यमुनाजी व्रज वृंदावन पसु पंछी कुंज गाइ गो-
पी इनके ऊपर श्री ठाकुरजी को जताए जो तुम सगरे
व्रजमें कहां फिरोगे ॥ सगरो पदार्थ चरनमें ऊर्द्धरे-
षा है ॥ तहां एक तो अनुभव करो ॥ ताकरि श्री ठाकु-
रजी प्रसन्न होइ श्री स्वामिनीजी के चरनपर जुर-
आइ रहे हें ॥ तथा ऊर्द्धरेषाकी सोभा देखिके श्री ठा-
कुरजी तिलक केसरिको याही भावतें धारण करत
हें ॥ तातें पुष्टिमार्गमें वैष्णवको केसरि कुंकुम-
को तिलक श्री स्वामिनीजी के चरनवत करनो ॥ ऊर्द्ध-
रेषाको स्मरण तिलक करत करे तो कबहू पुष्टिमा-
र्गमितें उहवे सब गिरें नांहीं ॥ दिन दिन ऊर्द्धगति-
वाकी होइ ॥ प्रभु सदां प्रसंन रहें ॥ या प्रकार श्री स्वा-
मिनीजी के दक्षिन चरणारविंदमें सात चिन्ह धरे

भाव: तिनको भाव बुद्धि अनुसार करो है ॥ अब सात पत्वं
२१२ न्ह कयो है ॥ ताको भाव कहत है ॥ जो दछिन चरण पुष्ट
है ॥ ताते सात चिन्ह धरिके यह जताए जो ॥ छहो ध
र्म संयुक्त श्री ठाकुरजी धर्मी है ॥ षडैश्वर्य जो षट जस
श्री ज्ञान वैराग्य यह छह धर्म सात धर्मी ॥ ऐसे पुरु
षोत्तम सदा दछिन चरनकमल को आश्रय कर
त है ॥ ताते दछिन चरनकमल को सात चिन्ह संयु
क्त जो चिंतन करे तिनके भाग्य को पार नाही निश्चय
वाको मार्ग ॥ के रसको प्राप्ति होइ ॥ या भाव ते दछिन च
रनके चिन्ह सात है ॥ ७ ॥ अब वाम चरणारबिंद के
चिन्हन को वर्णन करत है ॥ प्रथम चिन्ह गदा ॥ ता
को भाव यह है श्री ठाकुरजी के हस्त मे गदा है ॥ ता गदा
ने श्री ठाकुरजी के हस्त सगरी खिलोना जी तिके अ
पने वस करत भए ॥ ताते श्री स्वामिनीजी की ठाकुर
जी की गदा जो तिके अपने चरन मे धारे ॥ तथा श्री
स्वामिनीजी को बिहार है श्री ठाकुरजी ते सरयो नाँ

ही आवत है ॥ ताते श्री स्वामिनीजी के चरन मे चिं
न्ह की गदा अपने श्री हस्त मे लेके श्री ठाकुरजी ॥
वारंवार अवलोकन करि मनमें कहत है जो धन्य
यह गदा है ॥ ताको चिन्ह है ॥ जो मोसा रिखे अजी
तनको यह गदा ने जो त्यो ताते मे ॥ परवस भयो
तथा श्री स्वामिनीजी के कुंजन की के कुंजन की अ ॥
नुसार गदा है ॥ ताते श्री ठाकुरजी अब प्रहर अ
पने श्री हस्त में लेके भाव सहित वारंवार परस करिके
अपने हृदय सो लगावत है ॥ तथा भक्तन के उरस्थल
के भाव सो गदा युद्ध श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी के ने कि
यो ॥ तब श्री स्वामिनीजी श्री ठाकुरजी को गदा युद्ध करि जी
तिके बस किये ॥ तब श्री ठाकुरजी ने श्री स्वामिनीजी सों
प्रार्थना करी जो तुम अपनी गदा के बल मोको जीत्यों सो
भली भई ॥ परंतु अब याही प्रकार मोको गोपी सगरी जी
तिके बस करेंगी तब तुम कैसी करोगी ॥ तब श्री स्वामि
नी जी अपने चरन चिन्ह की गदा श्री ठाकुरजी को दे

भाव: २१३ कंकरी जो याकरि तुम सगरे ॥ व्रजभक्तनको जी तो ॥ त
ब श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी के चरन चिन्हकी गदा
जैके ॥ सगरे व्रजभक्तनको जी तिके श्रीस्वामिनीजी
के रस परवस होत भए ॥ तातें ॥ गदाको चिन्ह जो भाव
करिके चिंतन करे ॥ तिनको सरूपानंदको दान होइ
९ ॥ अब बांम चरणारविंदको दूसरो कमलको चिन्ह
हैं ताको भाव बर्णन करत हैं ॥ श्रीठाकुरजी के श्रीअंग
में नव कमल हैं ॥ दोय चरन कमल दोय हस्त कमल दोइ
नेत्र कहेत हैं कमल हैं ॥ एक नाभि कमल एक हृदय कम
ल ॥ एक मुखकमल ॥ ये नव कमल हैं ॥ ताको मकरंदरसके
अनुभवके अर्थ रसपानके लिये अनेक गोपीजन
करत भई ॥ सो पंचाध्याई में कहे हैं ॥ जो जब अंतर्ध्यान
श्रीठाकुरजी होत भए ॥ तब गोपीजन चरणकमलको
आश्रय करि चरनकमलसों लपटी ॥ कोई हस्तकमल
को आश्रय कियो ॥ कोई नाभिकमलको आश्रय कियो
॥ कोई हृदयकमलको आश्रय कियो ॥ कोई मुखकम

लको आश्रय किया ॥ कोई नेत्रकमलको आश्रय कि
यो ॥ परंतु काहूकों रसको प्राप्ति न भई ॥ तब सगरी गो
पीनें श्रीस्वामिनीजी सों प्रार्थना करी जो हम अनेक
उपाइ करी हारी परंतु हमकों स्वल्पहूं रसको अनुभव
[illegible] नांहीं भयो ॥ तातें हम तुम्हारी सरन हैं ॥ हमकों
कृपा करिके सरूपानंदको अनुभव करावो ॥ तब श्री
स्वामिनीजी ने अपने चरनकमलमें चिन्हकमल
कीनो तब सगरी गोपीनकों श्रीठाकुरजी श्रीस्वामि
नीजी के संबंधतें रसदान करत भए ॥ तातें सगरे ब्रज
में श्रीस्वामिनीजी के भाव संबंधतें रसकी प्राप्ति हैं ॥
और श्रीस्वामिनीजी के चरन चिन्ह हैं सो अत्यंत
सीतल हैं ॥ श्रीगोवर्द्धनधरके विरहतापके हर्त्ता हैं
॥ काम जलमें होत हैं ॥ सो श्रीस्वामिनीजी के चरणमें
सगरो प्रेमजल सिमटिके भरि रह्यो है जो कोई श्री
स्वामिनीजी के चरणकमलको आश्रय करें ॥ तिन
के हृदयमें प्रेमजलकी प्राप्ति होइ ॥ तातें पुष्टिमा

भाव: गमिं श्री स्वांमिनीजी की कृपातें प्रेमजल मिलें ॥ त॰
२१.ध थांश्री स्वांमिनीजी कमलयातें जरहें ॥ जो श्री ठाकु
रजी चरनसेवाकरें ॥ तव कमलकें परसतें सर्वरसको
अनुभव श्री ठाकुरजी को होइ ॥ ताही भावतें कमल॰
श्री ठाकुरजी अपने हस्तमें रात्र दिन लिये रहतहें ॥
॥ ता कमलकें भावतें श्री स्वांमिनीजी कें परसको अ
नुभव करतहें ॥ कमलहे सो तामें लक्ष्मी को बासहें ॥
कमल जो लक्ष्मी कों नांमहें ॥ तातें पुष्टिमारगमें श्री
दिदे बिक लक्ष्मी रूप श्री स्वांमिनीजी हें ॥ सो श्री सुबो
धनीजी के मंगला चरणमें श्री आचार्यजी महाप्रभु
कहहें ॥ नमामि हृदये शेषे लीला क्षीराब्धि सायनं ल
क्ष्मी सहस्रलीला भिसेव्यमानं कलानिधिं ॥ याप्रकार॰
नारायण पास एक लक्ष्मी हें ॥ तिनसबनमें मुख्य श्री
स्वांमिनीजी हें ॥ तातें लक्ष्मी श्री स्वांमिनीजी के चरन
कों आश्रय करि ब्रजमें रहत भई ॥ और कमलके ऊपर॰
भवर आश्रयसों बधि जातहें ॥ तैसें इहां श्री स्वांमि॰

नीजी के चरण चिन्हकें रसलोभी भवर लुभाइ पर॰
वस होइ रहेहें ॥ इत्यादि कमलकों भाव हृदयमें विचा
रनों ॥ ४ ॥ बांमचरणार विंदमें तिसरो चिन्ह रथकोहे
॥ ताको भाव वर्णन करतहें ॥ बडो प्रतापी होइ सो महा
रथी कहावें जैसें जो घमसपताके अर्थ प्रभु अपनी॰
प्रतिज्ञा छोडि अस्त्र लेदोरे ॥ यह प्रताप कर्नेसारि॰
पें अर्जुनके रथपर प्रभु त्रिलोकी को भार लेबेठे ॥ ऊ
पर ध्वजामें हनूमांन [illegible] कर्नके बांनतें रथ पाछें हटे
तब श्री ठाकुरजी कर्नकी सराहना करी ॥ तव अर्जुन॰
रिसकरिकें बांनमार्यो ॥ सो कर्नके रथकों पैया धरती
में गडि गयो ॥ तब कर्नें एक बांनसों धरती सहित ऊप
र रथ निकासि लीयो ॥ ऐसें जो घमकनों दिकनकों प्रभु॰
अर्जुन द्वारा आपु जीते ॥ ताकरिके श्री ठाकुरजी आ॰
पु महारथी कहावत भए ॥ तैसें इहां पुष्टिमारगमें सा॰
क्षात पुष्टि पुष्टि पुष्टि पुरुषोत्तम ब्रजभक्तनकी सुर॰
तिरनमें कोटांनकोटि स्वांमिनी नंदकुंजी तिनकें आप॰

भाव॰ महारणी कहावत भए॥ तब श्री स्वामिनीजी के संग रा
२१५ स विहार करत भए॥ तहां श्री स्वामिनी जी समान हू नि
सैंन भयो और विहार में हारत भए॥ तब श्री स्वामिनी
जी महारणी श्री ठाकुरजी तिनको जो तिके अपने च
रन में रथ को चिन्ह धरत भई जो मलिक हू पै श्री ठा
कुरजी को ऐश्वर्यता को मद होइ जब रथ को चिन्ह देषे
ताही समय दैन्यता होइ॥ तातें श्री स्वामिनी जी समा
न महारणी कोई नाही हैं॥ या भाव तें रथ को चिन्ह
३॥ अब श्री स्वामिनी जी के बाम चरन में चोथो चि
न्ह॥ सक्ति को है जाकूं बरछी कहत है॥ बडे बडे जोधा
जो काहू के बस न होइ सो सक्ति सो बस होइ लछमन
जी सो परूप सो असक्ति सो मूर्छित भए तेसें ही इहां श्री
गोबर्द्धन धाम महा जो धान के जो धा है॥ तातें श्री स्वामि
नी जी के ली लासंबंध में द्वादस सक्ति है सो श्री स्वामि
नी जी की आज्ञा में तत्पर हैं उद्धेदका॥१॥ विछेपका॥
२॥ जोगमाया॥३॥ कात्यायनी देबी॥४॥ वृंदा देबी॥५॥

श्री चंद्रावली देबी॥६॥ संकेत देवी॥७॥ ललिता देवी
८॥ मनसा देवी॥९॥ नोबारी देबी॥१०॥ चोवारी देबी
॥११॥ आनंदी देबी॥१२॥ इत्यादि देबी जो लासा मि
ग्री देबी में सहायरूप हैं द्वादस सक्ति हैं सो चरणारवि
द में सक्ति चिन्ह ते प्रगट भई है॥ उद्धेदका जो रस को
आछादन करें रहें रहस्य ली लाको ज्ञान और को
न होइ॥ विछेपका और को रहस्य ली लामें विक्षे
प करे ना जो ज्ञाता अंतराय करें॥ जोगमाया रासादि
क ली ला सामिग्री सिद्धि करें॥ कात्यायनी देवी साध
न भक्त के भाव को सिद्धि करें॥ वृंदा देवी चोरसोर वृंदा
बन में सकल षलुकी सामिग्री सिद्धि करें॥ श्री चंद्राव
ली देबी प्रभु सो रमन करावें॥ संकेत देवी व्रजभक्त
न को श्री ठाकुरजी को पधराइ के संकेत करावें॥ ललि
ता देवी मानादिक मनावें॥ मनसा जी हैं दोउन के बी
च में विमला देवी श्रृंगार सगरे भक्तन को करें॥ नौबा
री नौतन रस बार्ता सुनावें॥ चोवारी चारो ओर के बा

भाव: सो जूथपतिके आज्ञा अनुसार सेवा करे ॥ आनं
२१६ दा देवी सबनको विरहतापतें छुडाइ आनंद देइ ॥
इत्यादिक सक्ति श्री स्वामिनीजी प्रगट करिके श्री ठा
कुरजीकों अपने बस करत भई ॥ एक एक सखीके बस
श्री ठाकुरजी होत भए ॥ श्री स्वामिनीजीके प्रसंन्न क
रिबेको यह जताए जो में तुम्हारी सखीके बस हों तो तु
म्हारे बस हों‌उ यामें कहा कहनो ॥ तथा सखीनके उ
पर श्री ठाकुरजी प्रसंन्न देखें और अपनी सेवा ते
तत्सुख देखे ॥ तब श्री स्वामिनीजीनें सखिनको आ
दि दै चिक्रूप सक्तिरूप अपने चरनके चिन्हनको मु
कें धारन किए ॥ तातें श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी
के चरनकमलमें चोपत हैं ॥ तब सगरी सखिनको
सक्तिको परस करिके सुख देत हैं ॥ तातें सक्तिको स्म
रण चिन्ह प्रीतिपूर्वक करी ये तो सगरी सखी प्रसं
न्न होइ ॥ सगरी जो जासको अनुभव होइ श्री गोव
र्द्धन धर प्रसंन्न होइ अपने स्वरूपानंदको अनुभव

करावे ॥ इत्यादिक भाव सक्तिको विचारनो ॥ ४ ॥ अब
श्री स्वामिनीजीके वाम चरनमें मीनको पंचम चिन्ह
है ॥ ताको भाव वर्णन करत हैं ॥ सो मत्स्य अत्यंत चंच
ल है ॥ जल ही में रहत हैं ॥ तैसें ई श्री गोवर्द्धनधर अ
त्यंत चंचल हैं ॥ तिनकी चंचलता जो तिके तथा
श्री गोवर्द्धनधरके नेत्र चंचल हैं ॥ सकल ब्रजमें नें
न कटाछ करिकें सबनको मोहित कीयो ॥ ताकरिकें
॥ सगरे ब्रजकों रस सबनके हृदयमें ते षचिकें श्री
ठाकुरजी अपने नैनमीनमें राषत भए ॥ तब श्री स्वा
मिनीजी श्री गोवर्द्धनधरके नैनमीनकोजी तिकें ॥
अपने चरनमें सगरो प्रेमरस और मीनको चिन्ह
धारन कियो ॥ ताकरिकें यह जताए जो श्री गोवर्द्धन
धरकों रस आनंद देत हैं सो श्री स्वामिनीजीके चरन
में मीन हैं ॥ ताको आश्रय मिलें स्वरूपानंदको अनुभ
व होइ ॥ तातें भगवदी गाये हैं जु श्रीमन राधिकाके च
रन ॥ सुभग सीतल परम कोमल कूसे वरन ॥ ५ ॥ नष

चंद्रकांति अनुपराजित छबि बिबिधि सोभा भरन ॥ कुंजि
तन नूपुर कुंज बिहरत परम कौतुक करन ॥२॥ रसिक
बर मन मोदकारी बिरह सागर तरन ॥ बिबस परमा
नंद छिनु छिनु स्याम जाकी सरन ॥३॥ या भावतें ए
क लक्षण हूं ॥ श्री स्वामिनीजी के चरणार बिंदको श्री
ठाकुरजी नांही छोडत हैं ॥ रस बिना कैसें रहैं ॥ रसस
गरा मछके चिन्हके पास हैं ॥ अथवा जलको स्वा
दको मछही जानत हैं ॥ तैसेंई श्री स्वामिनीजी के
चरण चिन्हके स्वादको एक श्री गोवर्द्धनधरही जा
नत हैं ॥ तातें श्री स्वामिनीजी के चरणचिन्ह मछ
कौं लै श्री ठाकुरजी अपने चिन्ह श्रवणमें मकराकृ
त कुंडल धारन करत भए ॥ अपने कपोलनके निक
ट तातें मछको चिन्ह है ॥५॥ अब श्री स्वामिनीजी के
बाम चरणमें बेदीको चिन्ह है ॥ ताको भाव यह है प्रथ
म जज्ञमें तें भगवानको प्रागट्य हुतो ॥ बेदमें जज्ञमु
ख्य है ॥ काहेतें मथुरा जाने किया ॥ पांडवको श्री

ठाकुरजीने करायो ॥ जज्ञमन नंदके बडे सबननें कि
यो ॥ तातें सोमयगी कहाए यह मर्यादा जज्ञ ॥ और
पुष्टिमार्गमें श्री ठाकुरजीनें गोवर्द्धनके मिस जज्ञ
कराय सगरे ब्रजभक्तनकी सामग्री आरोगें ॥ तातें
यह पुष्टिमार्गमें अंनकूट करत हैं ॥ तातें मर्यादा
जज्ञ करि भगवानकी प्राप्ति हुती जज्ञके भीतर
भगवान बिराजत हैं ॥ तैसेंई इहां श्री स्वामिनीजी
आधिदैविक जज्ञकी बेदिरूप हैं ॥ अपने चरना
रबिंदमें धरिकें श्री गोवर्द्धनधरकों राखें ॥ ताहीतें
बेदीसिरूपाके अनुसार होत हैं ॥ तहां अनेक प्रकार
को रहस्य जो लीला होत है ॥ तातें जैसें मर्यादा पुरुषो
त्तम जज्ञ बिना एकहूं न रहें ॥ तैसें श्री गोवर्द्धनधर
श्री स्वामिनीजी बिना एकहूं न रहें ॥ तातें श्री स्वामि
नीजी चरणार बिंदमें बेदीकों धरिकें यह जताए जो
यह जो क्रियारूपासि न्यारूप हैं ॥ स्वाव ठे सगरा मनो॰
र्थ निकुंजजी जा रहस्य जो जाकों अनुभवकी याक॰

भाव:रो ॥ तातें पुष्टिमार्गीयवैष्णवदेहीकों जो कोई स्मरण
२१८ करे ॥ सो कोटानकोटि जज्ञ करिचुक्यो ॥ सिज्यारूपवे
दी देखिकें श्रीगोवर्द्धनधर आपुतें बाके हृदयमें आवें
॥ तातें वेदी अलौकिक सिज्या सिंहासन पालना सांगा
मांची चोकी ॥ इत्यादिक सब बेदी तें प्रगट भए हें ॥ तातें
यह भावना भगवदीयनके हृदयमें भावनी यहे ॥ तातें बा
हर प्रकास नाहीं कीयो है ॥ अब श्रीस्वामिनीजीके
वामचरणमें सप्तमो चिंन्ह कुंडलको हें ताको भाव
र्णन करत हें ॥ प्रथम श्रीठाकुरजी की यहेरीति
मर्यादामारगके साधनकराय अपनें कुंडलतें सा
रूप्य योग देत ॥ ताकरि जीवकी मुक्ति होत ॥ सो श्रीस्वा
मिनीजी यह जांने जो श्रीठाकुरजीकों मुक्तिदानको स्व
भाव पर्यो सो आछो नाहीं ॥ मुक्तिमें श्रीवृंदावनली
लारसको अनुभव नाहीं हें ॥ तातें परमफलरूप व्रज
की जो लारस हें ॥ तब श्रीस्वामिनीजीनें अपने प्रेम
सुंदरकटाक्ष करिकें श्रीगोवर्द्धनधरकों बसकरिजी

तें ॥ पाछें कुंडलतें अपने चरणकमलमें धारन किये
सो श्रीस्वामिनीजीके चरणमें मछको चिन्ह हें ॥ ताहीं
आकार कुंडल करि दिए ॥ पाछें चरणारविंदकी प्रसा
दी श्रीठाकुरजीकों देकें कहे अब यह कुंडल पहरो
अब यह कुंडल रसरूप भए अब यह कुंडलको आश्र
य स्मरण कोई करे तो भक्तिरसस्वरूपानंदको दान ति
नकों होइ ॥ सो एक श्रीगोवर्द्धनधर साक्षात तिनके
कुंडल पूर्ण पुरुषोत्तमके जो पुष्टिमारगमें सेव्यरू
प हें ॥ और अंसकला अवतारके कुंडल सांख्य जो
ग हें ॥ और नर्कासुर इंद्रलोकको जीतिकरि इंद्रकी
माताके कुंडल नर्कासुर ले गया तब इंद्रनें श्रीठाकु
रजी की प्रार्थना करी ॥ तब श्रीठाकुरजी मुरदैत्यको
और नर्कासुरकों मारिकें लोकमें जीतिके कुंडल राव
न और मंदोदरी रानी नें पहिरे ॥ सो इंद्र श्रीरामचंद्र
जी समुद्र उतरिके ॥ पार जाइ लंकामें उतरे ॥ तब राम
नरात्रिकों अपनी सभामें निर्भय अपछरा नृत्य

भाव कराये ॥ तब श्रीरामचंद्रजी बांन मारिकें रावनको
२१९ मुकुट कुंडल मंदोदरीके कुंडल गिराइ दीए जो हमा
रे आगें सों कुंडल पहिरेंगो ॥ तैसेंई इहां श्रीगोवर्द्ध
नधर सब अवतारनके अवतारी भूतल व्रजमें प्रग
ट होइ अपनों रूप सौंदर्य करि वल करि सगरी व्रज
के भक्तनको वस करि कुंडलको धारन किए ॥ तैसेंई
इहां श्रीगोवर्द्धनधरको वस करिकें अपने नेत्रक
टाछसों व्रीसाब्रवीनसों कुंडल गिराइ अपनें चरणा
धारण करि प्रसादी कुंडल दिए ॥ जैसें अपनें कोटि
जादव हैं ॥ तिनमें कुंडल काहूंको नाहीं दीए ॥ एक उद्ध
वजीको श्रीठाकुरजीनें अपनो अनन्य भक्त जानि
कें अपनो प्रसादी वागा आभूषण पीतांबर कुंडल
दीए ॥ तैसेंही श्रीस्वामिनीजी अपनें चरणारविं
न्दको प्रसादी कुंडलको श्रीगोवर्द्धनधरकों दिए
॥ सो श्रवननमें धराए ॥ तातें कुंडलको चिन्ह जो कोई
पुरुष मार्गीय भगवदीय तिनके हृदयमें भगवद

भाव आरूढ होइ ॥ ७ ॥ अब श्रीस्वामिनीजीके
वामचरणमें नगको चिन्ह है ॥ ताको भाव कहत हैं
॥ नग जो पर्वत तिनको चिन्ह काहेतें व्रजमें पांच पर्व
तकी लीला संबंधी है ॥ श्रीगोवर्द्धन ॥ नंदगाम
॥ बरसानको कामवनको चरन पहाडि ॥ बैठनकी
न पहाडी ॥ इन पांच पर्वतमें नित्य लीला र
मन श्रीगोवर्द्धनधर श्रीस्वामिनीजी सहित नि
रंतर करत हैं ॥ सो श्रीस्वामिनीजी पांच पर्वतको
मूल अपने चरनकमलमें चिन्ह करिके धार
न किए हैं ॥ ताकरि श्रीठाकुरजीकों यह जताए जो
सगरें ॥ गिरिराजकी लीला आदि देइ इहां है ॥ तातें
श्रीगोवर्द्धनधर छिन छिनमें चरनको आश्रय
करत हैं ॥ और पर्वतधरको अति प्रायपद है ॥
जो पर्वत लीला संबंधी जीवको अनुभव करावें
॥ अन्य जीवके आडे परें सो रहस्य लीलाको तो न
काहूकों न होइ ॥ तातें जो कोई भगवदीय श्री

भाव· आचार्यजी महाप्रभूनकें॥ श्री गुसांईजी के चारन आ
२२ इ श्री स्वामिनीजी कें चरणकमलनको आश्रय कि
रहे॥ तिनको पर्वत अनकुल होइ॥ तिन कुं जद्यपि
कें साधन करिवे में जीवको मन प्रवर्त होत हैं॥ ता
करिकें जीव नारसकें अनुभवतें बाहिर रहत हैं॥ याप्र
कार श्री स्वामिनीजी के बांम चरनमें ध्वज चिन्ह हैं॥
ताको अभिप्राय यह है॥ वेदमें तथा श्री भागवत
में आठ प्रकारकी सेवा एकादश स्कंधमें श्री भगवा
न उद्धव प्रति कहे हैं॥ सो आठ प्रकारकी सेवा करि॥ जो
हीं श्री स्वामिनीजी के बांम चरनको चिंतन करे॥ अ
थवा आठ प्रकारकी सेवा होनी कठिन है॥ एक ही प्र
कारकी सेवा दुर्लभ है॥ तातें श्री स्वामिनीजी अप
नें बांम चरनमें ध्वज चिन्ह धरिकें॥ यह जताए॥ जो
कोई भाव सहित पुष्टिमार्गीय वै सब चिंतन करें
गो॥ तिनको सगरे फलनकी सिद्धि होइगी॥ याप्र
कार दोउ चरननके चिन्ह भाव सहित वर्णन किए

दोउ चरणमें पंद्रह चिन्ह हैं॥ ताको अभिप्रायय
ह है जो तिथि ते पंद्रह हैं॥ तामें सगरे महीनां वर्ष
आइ गए॥ तातें जो वै सब पंद्रह चिन्हको चिंत
न करें॥ तिनको कबहू कोई कालमें रसके अ
नुभवमें प्रतिबंधन परें॥ सदा एकरस स्वरूपा
नंदको अनुभव करें॥ याप्रकार चरन चिन्हनके
भावकछू अपनी बुद्धिके अनुसार वर्णन कि
ए॥ इति श्री गोकुलनाथजी कृत चरण चिन्ह
टीका संपूर्णं॥ श्री कृष्णाय नमः॥ अथ नि
त्यकी भावना लिख्यते॥ वैष्णवको प्रातःकाल हो
तही भगवद्सेवाको चिंतन करनो॥ रात्रिको वियोग
विचारनो॥ दर्शनकी आसराखनी॥ उठत ही अपनें
श्री माताको दर्शन करनो॥ माता भगवदीय हैं॥ इनके
दर्शनतें भगवद्ज्ञानकी उत्पत्ति होइ॥ प्रथम श्री आचा
र्यजी कों स्मरण करि नमस्कार करि श्री स्वामिनीजी
कें रूपकी भावना करीयें॥ पाछे श्री गुसांईजी कें

नते

नित्य स्वरूपको चिंतन करि नमस्कार करि श्री चंद्रावली
२२१ जीके स्वरूपकी भावना विचारीये ॥ पाछें अपने गु
रुजनको निवेदन होइ ॥ तथा पहिलें नाम आरबा
लकतें सुन्यो पाछें ब्रह्मसंबंध और औरनें यातें
चिंतानांही ॥ नामदाता गुरुको नमस्कार करि पाछें
निवेदन मंत्रदाता गुरुको स्मरन करि नमस्कार करि
श्री गुसांईजी को रूप ही विचारनो ॥ श्री वल्लभकुलमें
भेदबुद्धि न करनी ॥ सगरे श्री आचार्यजी को वंश अ
लौकिक है ॥ पाछें देहकृत्य करनो दंतधावन करनो
॥ पाछें बीडी वनि आवे तो मुष शुद्धर्थ लीनो ॥ औ
सेंनमें प्रभु पास वासन आवे ॥ पाछें तैल अंगारस
न करनो ॥ व्रत होइ तो बीरा न षाईये ॥ द्वादसी कों ते
लगायके नहीं न्हानो ॥ देह पोछि अपरस वस्त्र प
हरि आसन परबैठि तिलक धारन करनो ॥ सवा के स
मयकी ढील न होइ तो मुद्रा धारन करनो ॥ समय होइ तो
तिलक करि चरणामृत लेके मंदिरके द्वार जाइ दंडो

त करनो महा नमकरि जय विजय नंद सुनंद चोरी
याको चिंतन करनो ॥ भाव पूर्वक वात्सल्यरसमें श्री
यशोदाजी रोहिनी जो सब बालवाल दर्सनार्थ आए हैं
॥ तिनको स्मरन करनो ॥ कुंज संबंधी रहस्य जो जा
में ललिता विसाषा आदि सषिनको स्मरन करनो
कुंज जैसा भाव पूर्वक मनमें नमस्कार करि सषिन
कों विनती करनी में तुम्हारी दासी हों श्री आचार्य
जी श्री गुसांईजी और देखिके उनकी को नितें अ
पनें आज्ञाकारी न दासी जो नि संग जी जें जुगल
स्वरूपकी सेवा जोग तुमही हो तुम्हारी कृपातें प्रभुको
कों दर्सन देहिंगे ॥ या प्रकार प्रार्थना करि मंदिरके
दोउ किवाड है सो श्री स्वामिनीजी के नेत्रनको ॥ पल
कन के भीतर नेत्रनमें श्री ठाकुरजी दमकत है ॥ ता
तें दुहों मंदिरके किवाडमें भीतर प्रभु बिराजत हैं
तहां भीतर जाइ यह भाव बिचारे जो मंदिर अक्षर
ब्रह्मको स्वरूप है ॥ ताके भीतर पुरषोत्तम बिराजत

निस्य हैं तथा मंदिर श्री वृंदावन के भीतर कुंजरूप है
२२२ ॥ तहां जुगल स्वरूप पोढे हैं ॥ बहुत ऊंचे बोलनों
नांहीं कहूं प्रभु जागी उठेंगे ॥ तथा मंदिर श्री नंद
रायजी कौ घर है ॥ तहां न्यारी बैठक चोवारे पर
श्री ठाकुरजी पोढे हैं ॥ इत्यादिक भाव बिचारि के
घासा जलते घडि तथा मस्तिका जगाइ हाथ धो
इयें पाछे तीन प्रकार प्रथम घंटा बजाइये ॥ ता
को अभिप्राय यह है ॥ ब्रजमें तिनि प्रकार की गा
इ है ॥ राजसी तांमसी सात्विकी तिनके कंठमें छो
टी छोटी घंटी है ॥ सो गायन को समय बडी बहुत
ही कूपरत है ॥ बछरा त्रैके नखे हैं ॥ तथा पाछें दोह
अर्थ मस्तक जगाइ घंटा बजाइ प्रभुकों जगावत
हैं ॥ तथा श्री नंदरायजी के घर कुमारिका सोर
हह जार है ॥ तिनहूं मे राजसी तांमसी सात्विकी
हैं तिनकों हूं कुंब घंटी है ॥ तिनको नांहीं मधुरसु
र घंटी है ॥ सो गांन करिके श्री ठाकुरजी को जगाव

तहां ॥ तथा निकुंजमें श्री स्वामिनी जी की लीला सें
बंधी सुकसारी कौ श्री स्वामिनी जी के पाले हैं ॥ तिनकों
समय समय के जगाइबे की टहल दीनी है ॥ परंतु सु
कसारी कौ या बेडर पत है जो तमचुर हूं नीना कों पंछी
हुतो ॥ परंतु एक समय श्री स्वामिनी जी श्री ठाकुर
जी संग लीला में रस परवस हुती ता समय घडी
[illegible] पिछली को समय भयो सो बिना बिचारे
बोल्यो ॥ तब श्री ठाकुरजी चोंकि उठे जो भोर भयो
तमचुर में प्रबजाल हो ॥ यह बचन श्री स्वामिनी
जी के हृदयमें तो ब्रविरहरूपी बांन लागे ता करि
मूर्छा पाइके गिरी ॥ पाछें श्री ठाकुरजी अपने अ
धरामृत सों सींचिके चैतन्य किए ॥ पाछें श्री ठाकुर
जी अनेक प्रकार की सुंदर वार्ता करि प्रसंन किए
तब श्री स्वामिनीजी तमचुर के ऊपर क्रोध करिके
श्राप दियो जो जै असुर के घर सदा रहो ॥ ताही सम
य निकुंज तें वे पंछी गिरे ॥ ताकी भयतें सुकसारी का

भाव: जगावे तो श्रीस्वामिनी जी अप्रसंन होंइ ॥ ताते श्रु
२३ क सारी को आदि दै विक सुक मुनि रूप है सो मधुर सु
२२३ रसों ललिता विसाषा के घंटा की नांहीं वो लि के ज
गाइ देत है ॥ तब ललितादि सषी भय संयुक्त बी
न बजाइ पाछें संषकी नांहीं कंठ इन हूं के है ॥ सो स
षी सहचरी तिन प्रकार की है ॥ राजसी तामसी सात्वि
की ताते तीन प्रकार के है ॥ ताते तीन बार संषनाद
होत है ॥ सो यह भाव की जो ज्ञ तावे सब कों नांहीं स्वा
मिनी भाव की वे सब ताते संष नांहीं भावनां वि
चार के करेगो प्यता को खिं तां नांहीं [illegible] प्र
कार स षिन के दूसरो पुरुष भाव के अप्रकासी तव
हीं के रूप है ॥ ताते द्वारपालिया नंदराय जी के तहां
संष बजाइ स्वामिनी जी के कंठ के नाद की सुरक्षित करा
वत है ॥ इत्यादिक घंटा संषनाद की भावनां करनों पा
छें फेरि हाथ धोइ मंदिर में जाइ सिज्या भोग की वंटी
माला वीरा झारी सब बाहिर ल्याइ प्रसादी पात्र में

सब ल्याइ दैनों मंदिर वस्त्र करि सिंघासन नित्य
रुठ किके षिछावनो ॥ सो महात्म्य में अद्भुत स्वरूप
श्री षरूप है ॥ श्री नंदराय जी जामें श्री यसोदा
जी की गोद रूप है ॥ प्रभु को गोद में लिये है ॥ दोउ त
कीया श्री यसोदाजी की भुजा है ॥ पीछे को वडो त
कीया श्री यसोदाजी को वडाहू दो है ॥ तथानंदा
रहस्य वार्त्ता में श्री स्वामिनी जी को दूसरो
स्वरूप कुमारिका को है ॥ तिनके भाव सो तिनके दू
स्वरूप में होउ श्री स्वामिनी जी करत है ॥ ताते कुमारि
का में मुख्य राधा सहचरी है तिनकी गोद सिंघास
न है ॥ पीछे को तकीया हृदय दोउ तकीया भुजा श्री
र लिकुंज में दोइ प्रकार को भाव है जुगल स्वरूप की
सेवा ललिता विसाषा आदिक रति है ॥ सो श्री चं
द्रावली जी श्री ललिता को दूसरो स्वरूप ललिताजी
को है ॥ श्री चंद्रावली जी को है ॥ श्री चंद्रावली जी
ते प्रगट ललिता विसाषा है ॥ ताते कुंज में लल

भाव: ताजी की गोद त्यां श्री चंद्रावलीजी की गोदरो
२५ २२४ कृत क्रियानुजा ॥ पीछे को तकी या हृदय पर यह ॥
भाव विचारनो ॥ तथा श्री स्वामिनीजी सो श्री चं-
द्रावलीजी [illegible] को प्रागट्य है ॥ ताते श्री स्वामिनी-
जी को सो प्रगट दूसरो सरूप ही माननो ॥ ताकरि
श्री स्वामिनीजी की गोद सिंहासन बस्त्र है ॥ सो त्यह
गादि पीछे को तकी या हृदय दोऊ तकी यानुजा रू-
प सिंहासन में कलसा कुंच रूप है ॥ पाछें तकिया पा-
मुकें दछिन भाग है ॥ ता पर मुखवस्त्र नुं निवेदर-
नो ॥ सो मुखवस्त्र वात्सल्यरस में श्री यसोदाजी के
लहेंगा को घेर रूप ॥ निकुंजमें श्री स्वामिनीजी के
लहेंगा को घेर रूप मिलो है ॥ यह भाव विचार ॥ मंदि-
र वस्त्र में जल मांटी जल कर साखीक जाइ ॥ रजसो
राजस जाइ तापकी लि बिरति होइ ॥ या मंदिर सो ल-
ल होइ ताकरि तामस जाइ ॥ यह महात्म्य लम में रह-
स्य है ॥ जल है सो श्री धरा मलको सीचन रहे सो ब-

रनकमलको कुंकुमलाक रिन लित्ता दिक कुंजमें
स खिनकी ताप जाइ हृदय में सी तलता होइ ॥ झा-
री बस्त्र घालिके माजिके पूरनो ॥ सिंहासन के
वाम भाग धरनो झारी वात्सल्य में श्री यसोदाजी
रूप ॥ टोंटी कुच रूप पय पान बालक को करावत है
॥ झारी को वस्त्र जालसो यसोदाजी को साडि पहि-
रे है ॥ रस्य में माजिके धोबनी ॥ सो यसोदाजी देह-
सेस्य त्रू सिके नित्य स्नान करति है ॥ यह नंदालय-
को भाव ॥ तामें कुं मासर काके हूं भाव विचारनो ॥
श्री निकुंजमें एक भाव श्री यमुनाजी को है ॥ तत-
था मुख्य भाव श्री स्वामिनीजी वाम भाग विराजी है
॥ रससरूप वस्त्र रंगी न झारी परयाले सौभाग्य वली रं-
गीन रूप हेरें ॥ श्री यमुनाजी तो सब ठोर मिली है ॥
नंदालय में गोपिनमें हूं निकुंजमें तो श्री स्वामि-
नीजी रूप है मुख्य तो ताते इनको न्यारो बर्नन बहु-
त नाहीं है ॥ मंगला भोग जो वधन भाव श्री भोग दूध

भाव कटोरीमेंदह्यी एककटोरीमेंसंधानोएककटोरीमें
२२५ बूराएककटोरीमेंजाईकी ॥ एक कटोरी माखनकी ॥
एककटोरी मिश्री की और पूरी बनेतोलडुवाव
लेभोगकेसो मिश्री अनसखडी नित्यनबनेतोचा
पेंदिनकपी छेनवीकरनी फेरतिसो मिश्रीकर
कबहूंनेर ॥ कबहूं निकुतीके लाडू कबहूं सेवके
लाडू ॥ कबहूं गूंझा ॥ कबहूं मठरी ॥ कबहूं सक्करपारा
कबहूं मगदकेंलाडू ॥ याप्रकार मंगलाभोग सिद्धि
करीये एकवस्त्रसो ढांपपीछें ॥ श्री ठाकुरजीको
जगाइ प्रथम मुखारविंदकोंदर्सनकरीयें ॥ काहेसेमु
खार विंदकोरूपश्री आचार्यजीहें तिनको स्मरण
करीयेंसो तत्कालहोइतोरजाईसिखकेउपरईसिंहा
सनपेंपधराईये ॥ समय अनुसारठाईयेंजुगल
सरूपहोइतो सिंघासनपरदोऊकोंसंगहीपधराईयें
॥ काहेतें प्रातःकालकोरंचकहूं वियोगदोऊसरूप
सोंसह्योनजाइ ॥ याप्रकार सिंघासनपरदोऊसरू

पकी भावनांकरनी ॥ रसोईकरनवारी होइसोवासम
यदर्सनकरिजाइ और कोईकोंनाहीं मंगलाभोगलें
केधरीयें ॥ तामेंवात्सल्यरसमें चोकोरी हेनी जोरू
प ॥ कटोरा श्रीयसोदाजीके हस्तरूप ॥ कुंजसंबंधीमें
चोकी ललिताजीरूप ॥ कटोरा श्रीस्वामिनीजीकेक
रुप ॥ सोनेकेपात्रपीतरकेपात्र ॥ तामें श्रीस्वामि
नीजीको भावरूपेकोपात्र ॥ कांसेकोपात्रश्रीचंद्रा
वलीजीको भाव ॥ इनकेकुंमारिका श्रीस्वामिनीजी
की आई ॥ श्री यमुनाजी सबमें आई ॥ तातेंसोनेकेभा
बना पितरमें ॥ कांसेमें रूपेकी भावना ॥ कटोराबडो
श्रीचंद्रावलीजीको करकटोरा श्रीस्वामिनीजीकोक
र ॥ तामेंकुंमारिका आइगई याप्रकार मंगलाभोगधरि
केंप्रार्थनाकरीयें श्री आचार्यजी श्री गुसांईजी अप
नेंगुरुलप्या अष्टछाप चोरासीवैस्नवकोहूंकों निव
रनी ॥ पाछें टेरादेइ बाहर आवनो टेरादेवें सोमायारू
पहें ॥ मायादोयप्रकारकी हें ॥ एक अविद्यारूपजोम

लिभगवदचरनमेंमनहीकोंनलगावनदेंहैं॥ एकविद्या
२२६ रूपजोभगवदसेवासहायकसा(मिग्री)मेंआगेंठेरा॥ या
तेंजोसामिग्रीमेंआडोटेरा॥ यातेंजोसामिग्रीस्वरूपा
त्मकहें॥ प्रभुभोगकरतहें॥ सोएकांतबिनानहोइ॥ तातें
मायारूपठेराआइ औरभक्तनकेमनोर्थसिद्धहोतहें
औरवात्सल्यरसमेंठेराहें॥ यातेंकाहूकीदृष्टिनलागें
॥ तथाकुमारिकाकेभावतें॥ तथाश्रीस्वामिनीजीप
धारीहें॥ सोसंगहीश्रीयशोदाजीवालभावतेंअपने
॥ पुत्रकोंवेठाइमंगलाभोगधरें॥ तबठेरामायाको आ
डेंठेराहोइरहस्यलीलामेंगोपनकरतहें॥ सोप्रभुको
मंगलाभोगधरिसिज्याभंदिरमेंजाइकेंसिज्याउठाबु
हारीपोलनाकरिसिज्याकेंबस्त्रकसनाबांधिके॥ रुदछि
केंबिछाईयेप्रबोधनीतेंकसनाबांधियेरामनो
मीतांईरामनोमीतेंकसनाबांधियेप्रबोधनीतांईता
कोकारनयहहें॥ प्रबोधनीतेंसीतबहुतहें॥ रामनोमी
तेंउष्णकालबहुतहें॥ तातेंसिज्याभक्तरूपहें॥ बिरहप्र

गटहें॥ उष्णकालमेंतातें॥ चारोंओरतेंप्रभुकोघेरेंहें
जेसेंदसहूंबिरहवंधनहें॥ तेसेंहमतुमहूंवंधनकरि
घेरेंहें॥ सीतकालमेंबिरहभितरहोइ॥ काहेतेंअंग
आपहीतेंछिपटिरहें॥ वंधनकोकहाकामहें॥ सो
तेंसीतकालप्रभुकेंभक्तनकोंपरमसुषदाईहें॥ तातें
नानाप्रकारकीसामिग्रीतातीकस्तुरीजायफलआ
दिलेंभोगआरोगतहें॥ सोमिसतेंप्रभुकोंजताव
तहें॥ जेसेंअंगोअंगगाढोमिलिकेंहमारेंऊपरको
बिरहदूरिकीयो॥ तेसेंहीहृदयकेंभीतरपधारिकें
भीतरकीतापदूरिकरी॥ यहभावजतावनकेंअर्थ
गरमसामिग्रीसुहागसोंठिआदिआरोगतहें॥ सिज्या
मुख्यस्वामिनीरूपहें॥ दोउओरकेंतकीयाभक्तनके
हस्तहें॥ सिज्याकेंबस्त्रभक्तनकेंहृदयहें॥ तथासिज्या
चारोंजूथपतिकेभावतेंचारिहीपायहें॥ चारूसरू
पाटीहें॥ चारहीतकीयाप्रभुकेंचारोंओरहें॥ बांम
भागश्रीस्वामिनीजीदछिनभागश्रीचंद्रावलीजी

नित्य सिरहानेकी ओर श्री यमुनाजी पांइलकुमारिका
२२७ ॥ यह भावसिंज्यामें विचारनो ॥ जाके कपोलके भाव
तें है ॥ सो ताके पास दुलीचा बिछाइ तहां सब सखि
नको भाव विचारिये ॥ सिज्याको चादरि उढाइ वा
हर आइ शृंगारको साज निकासिये ॥ जैसी रितु हो
इ ॥ सीतकालमें रूईको बागा श्री यमुनाजीके उदर
कौ भाव परम कोमलतकी याधरिये ॥ प्रभूको सरूप
पुष्ट दरसन होत है ॥ सो श्री स्वामिनीजी हूं पाइके प्र
फुलित होत हैं ॥ पाटको बागा ताके उपर धोरा पाट ॥
श्री स्वामिनीजीको स्वेत पाट श्री चंद्रावलीजी को स्या
म पाट ॥ ललिताजी हरे पाट ॥ कुमारिकाको सोम पाट
श्री यमुनाजी ओर अनेक रंग श्री स्वामिनीजी केभा
वतें धारत हैं ॥ बागाको घेर श्री स्वामिनीजीके लहंगा
सूथनजो श्री स्वामिनीजीकी चोली ॥ उपरना सो श्री
स्वामिनीजीकी साडी ॥ जरीके बागा विजेदसमीतें
कार्तिकसुदी दसमी तांई ॥ पाटके बागा सो प्रबोध

नीतें फागुन सुदी चोथि तांई ॥ ता बागा जरीको सो
कार्तिक वदि ११ ॥ स्याम जरी श्री यमुनाजी के भाव
तें ॥ कार्तिक वदि २ ॥ बार सिपीरी जरी श्री स्वामि
नीजीके भावतें है ॥ कार्तिक वदि १३ ॥ हरी जरी
सोरह हजार अग्निकुमारिकानके भावतें हैं ॥ का
र्तिक वदि १४ ॥ लाल जरी श्री ललिताजी के भाव
तें है करत शृंगार धराइये ॥ सीतकालमें सिज्या
के उपर सिरहानेके तकीयामें दोऊ ओर धो
ला कस्तूरीकी घेली करिके बांधिये ॥ काहेतें सी
तकालमें सगर व्रजभक्तनको अंग अंग गाढो
अवलंबन है ॥ ताते दोऊ ओर कस्तूरीके मिस
तें श्री यमुनाजी विराजत है ॥ जहां श्री यमुना
जी होइ तहां हिरष दोष सबको मिटि जाइ रस
रूप भाव सबनको होइ ॥ अब लपटली यातें पाग
पिछोरा श्री नवनीत प्रियजी होइ ला पाग ओ
ढनो धारन करें काहेतें भक्तनको विरह प्रगट

लिना है॥ तातें पंषा चंदन अरगजा धारन होत हैं॥ तोऊ विर
२२८ ह की सीतल नांही होत हैं॥ सो तत्काल में अंगीठी धरिके
तापदि पावत हैं॥ या प्रकार समय होइ तब मंगला
भोग सराईये॥ तब आचमन की झारी श्री यमुनाजी
रूप॥ तथी ललितादिक रूप सषी दोऊ सरूप के मुषकी
प्रसादी जलधारन किये॥ मुखवस्त्र बीरी श्री स्वामि
नीजी के मुषको अंगार आरोगत हैं॥ प्रसादी जल की
झारी ठलाइ नई भरे पाछें मंगला आरती करे गारमी
में चार वाती की॥ सो तत्काल में सो रह वाती को अपने
हृदय में रात्रि को विरह हतो सो प्रभु पर न्योछावर
कियो वा सत्य रस तें श्री यसोदाजी पुत्र को [illegible]
रिवासनो करत है॥ पाछें दंडोत करि प्रसादी हाथ धो
ईये॥ तथा मन को विरह अग्नि रूप है॥ तातें हा
थ धोई हाथ सेकी करि श्रृंगार करीये॥ सो तत्काल हो
इ तो हाथ सेकिके श्रृंगार करीये॥ सो प्रकार आगें क
हत हैं। प्यारी पर चोवा को विधाइ तापर चार परत को

वस्त्र विधाइ उत्सव होइ तो अभ्यंग को साज निकट
धरिये॥ पाछें सगरो श्रृंगार बडो किये॥ गाढ सरूप हो
इ तो तनियां पहरि न्हाइ॥ श्री नवनितप्रियजी होइ तो
कछू वस्त्र न रहे॥ तथा श्री नंदराइजी के भाव तें गाढ
सरूप हू न्हातें बेर वस्त्र नांही पहरे॥ न्हाइवे की प्यारी
हे तें श्री ललिताजी चोकी श्री चंद्रावलीजी॥ ऊपर व
स्त्र श्री स्वामिनीजी की उतरी स्यामस्वरूप नित्य पु
लेल लगाइ न्हाइ॥ श्री नवनितप्रियजी के सरिच
अनमें रचि फुलेल लगाइ न्हाइ अभ्यंग के दिन आ
वला निजाइ धानिके ताकें जीतर हरदी रंचडारनी
सषी तुलसी पिसिके रंच डारनी फुलेल रंच डार
नो श्री अंगमें मर्दन को मल मर्दन करीए॥ अपरा
ध को नमराषीये॥ आंवला श्री यमुनाजी के भाव तें
॥ तुलसी कुमारिका के भाव तें हरदी अभ्यंग में अ
नौकिक व्याह तें सूचन का है॥ श्री स्वामिनी जी के अं
ग के बरन है॥ फुलेल श्री स्वामिनी जी को सनेह श्री

लिया चंद्रावलीजी रूप तातो जल श्री स्वांमिनीजी कें
२२८ हृदयको विरहतातें प्रभु सांन करें ॥ सो चंदन श्री
चंद्रावलीजी रूप केसर श्री स्वांमिनीजी रूप ज
जसो श्रीयमुनाजी रूप ॥ या प्रकार न्हाइ चुके ॥ ज
बलोटामें घोरासो जल रहे ॥ तब प्रभु परवारि पा
रमें डारि अंगवस्त्र करीयें ॥ ताको भाव यह न्हा
तीवेर सर्वांग दर्सन करि दृष्टिदोष निवारणार्थ ज
लवारनो ॥ अंगवस्त्र पाछें स्यांमसरूपको चोवा
समर्पनो ॥ गौरसरूपको अतर समर्पनो ॥ चोवा श्री
यमुनांजी रूप ॥ अतर श्री स्वांमिनीजी रूप चोवा
श्रमजल ॥ गाढ सरूपकों तनी या धराई श्री स्वा
ब निल प्रियजी होइ तो सी तकाल होइ तो रूईको
वागा गदल ॥ उस्नकाल होइ तो प्रोढनी अलंकार
धरत होइ तो धराईयें अंजन धरत होइ तो धरा
ईयें अंजनमें काजर घी वरासस्त्व काजर ॥ श्री
यमुनाजी घी श्री स्वांमिनीजी कौ सनेह ॥ बरा

स श्री चंद्रावलीजी चरनारविंदमें नूपुर सो श्री स्वा
मिनीजी पहरावत हे ॥ तथा श्री यसोदाजी वात्सल्य
रसके अधिकले नूपुर धरावत हे ॥ सो ऊ श्री स्वामि
नीजीके भावते ॥ श्री यसोदाजी के घर कुमारिका शृं
गार करत हे ॥ निकुंजमें श्री स्वांमिनीजी अपने हा
थसें शृंगार करत हे ॥ श्री स्वांमिनीजी को शृंगार श्री
चंद्रावलीजी करत हे ॥ श्री चंद्रावलीजी को शृंगार
श्री ललितादिक सखी हे सो करत हे ॥ इत्यादिक भाव
विचारनो शृंगार में दोय प्रकार को भाव हे ॥ रीत वि
परीत ॥ मर्यादामें रीत को शृंगार पुष्टिमें विपरीत
को सिषातें शृंगार करीयें नषतांई ॥ सुरत नषतें सि
षवें पर्यंत होत हे ॥ निकुंजमें श्री स्वांमिनीजी नष
तें सिष पर्यंत करत हे नूपुर पाछें जेहर घूंघरू को
रुघूघरू धरावत हे नूपुर श्री स्वांमिनीजी के भावते
॥ जेहर श्री चंद्रावलीजी के भावते ॥ गूजरी श्री यमु
नाजी के भावते ॥ घूंघरू कुमारिका के भावते ॥ सोने

निजा जीश्री यमुनाजी के भावतें ॥ रूपकी श्री चंद्रावली जी
२३ के भावतें ॥ मनिनको श्री यमुनाजी के भावते हीराको
कुंमारिकाके भावतें ॥ तापाछें कटि छिंकिनी पीताँव
रजाके ऊपर धरें ॥ जो रास हिंक विहारमें रसको उद्दी
पनकर्त्ता है ॥ सो श्री स्वामिनी जी के कटिको प्रसाद
हैं ॥ नौरत्नको ग्रंथी एसी जानवे जंती माजाते ग्री
वाते कटि पर्यंत आई है ॥ सो नौ प्रकारके भक्तसाध
न कुंमारिकाश्रुतिरूपा के भावतें जाननों ॥ ताके ऊप
र सोनेके फूलमनी यांबी चवी चमां निवपरतें ॥ सो
नेकी श्री स्वामिनी जी के भाव ॥ मांनककी श्री यमुना
जी के भाव दोउ नित्य सिद्धाके भावतें जानिये ॥ ताके
ऊपर गजमुक्ताकी माला सो उज्ज्वलके वलश्री चंद्रा
वली जी के भावतें धरे है ॥ ताके ऊपर सोनेकी सांकल
हृदय पर है ॥ सो श्री स्वामिनी जी के भावतें सनेहरूपी
फांसी करि श्री गुसांईजीको बस किये हैं ॥ ताके बिचमें
हृदय पर चोकी बिराजत है ॥ सो श्री चंद्रावली जी के

हृदयरूप हीराकी रत्नजटित धुकधुकी है ॥ सो श्री
स्वामिनी जी के ओर श्री यमुनाजी के भावते है ॥ तहाँ
ऊपर परव(स) कलां धनके चिन्हकी भावना करत तहां आ
छिदै विकज लक्ष्मीरूप श्री स्वामिनी जी को अपने हृद
यमें श्री ठाकुरजीने छिपाइ राखे है ॥ तहां कंठमें कौस्तु
भमनिकी भावना करीयें ॥ तहां कोटानकोटि स्वामि
नी नैहनको छिकानो है ॥ तहां कंठमें सोनेकी हंसु
ली पहिरें है ॥ सो श्री स्वामिनी जी के भुजाके भरोसनके
भावतें अपने कंठमें हंसुली धरि गलबाहीं दिये हैं ॥
ताहंसुलीमें नकासी चित्र विचित्र है सो श्री स्वामि
नी जी के भुजामें आभूषनको भाव विचारनो हंसुली
में दोउ ओर नोक मोरी है ॥ सो श्री स्वामिनी जी के भुजा
में कोंनपको भाव है तीनलरकी माला पांचलरकी मा
ला सातलरकी माला ॥ नौ सूरात लै रहे लरा इक्कीसलरा
इलनी माला धरत है ॥ तीनलरकी माला धरत है ॥ ती
नलरकी मालाकों भावयह है ॥ तीनमाला भक्तनके

नित्य प्रकारके भावतें ॥ राजसी ॥ सात्वकी ॥ तांमसी ॥ पांच प्र-
२३१ कारहें पचलरा श्री स्वांमिनीजी श्री चंद्रावलीजी श्री
श्री यमुनाजी कुंमारिकाके भावतें श्रोरसकूं स्वा-
मिनीके भावतें सतलरा राजसी तांमसी सात्विकी
॥ तिनियहे ॥ चारो जूथपतिनके मिलिकें सातप्र-
कारके ॥ नोलरा नो प्रकारकी नो धाम तिनमें भावतें
तेरहलरा भक्तनके अंगके भावतें ॥ एक मुख्य श्री
यमुनाजी स्वांमिनीजीके भावतें इक्लरो सतलरा दस
प्रकारके भक्त श्रुतिरूपामें ॥ नोप्रकारके भक्त कुमारि-
कामें ॥ कुमारिकामें तांमसी एक नांही हे ॥ सो गोपिका-
गीतकी श्रीसुबोधनीमें लिखेहें ॥ याहीतें [illegible]
कगोपीकागीतमेंहे ॥ एक श्री स्वांमिनीजी एक श्री य-
मुनाजी ये नित्य सिद्धा मिलिकें इक्लरा धारनक-
रतहें ॥ तासगरी मालानके ऊपर वनमाला तुलसी त-
प्या अनेक वनास्पती फूल आदि सगरे व्रजकी स्वांमि-
नी सखी सहचरी दूतीके भावतें ॥ तातें कंठतें चरण॥

र विंदलों धारण किएहें ॥ तापरनवररूप श्री ठाकुर-
जी अनेक रूप धारन करतहें ॥ सो वनमाला पर आइ-
कें सगरे भक्तनके रसको अनुभव करतहें ॥ कबहूं अ-
केली तुलसीकी माला धारन करतहें ॥ ताकरि श्री
स्वांमिनीजीके श्री अंगके गंधको अनुभव करत
हें श्रीपांगांगंधसुरभी तुलसी चरणप्रियां ॥ इत्या-
दि भावतें कबहूं कमलके ॥ फूलनकी माला पहिरत
हें ॥ सो श्री स्वांमिनीजीके हृदयको भाव यहहें ॥ हृद-
यतें हृदय मिलावतहें ॥ कबहूं पीतचमेलीकी मा-
ला पहरतहें ॥ सो श्री स्वांमिनीजीके श्री अंगके व-
र्नन करतहें वर्नहे ॥ ताके भावतें ॥ कबहूं स्वेतचमे-
लीकी माला धरतहें ॥ सो श्री चंद्रावलीजीके श्री
अंगके भावतें ॥ कबहूं कूंदकलीकी माला धरतहें ॥ सो
श्री स्वांमिनीजीके दंतावलीके भावतें ॥ कबहूं चंपा-
के ॥ फूलनकी माला धरतहें ॥ सो कुमारिकाके भावतें
कबहूं गुलाबके फूलनकी माला धरतहें ॥ सो श्री

निन्या स्वामिनी जी के हास्यमें फूलन गरत हैं॥ ता भावतें
२२ २३२ ॥इत्यादिक सगरे॥ फूलन ब्रजमें स्वामिनी के भावतें
हें॥ कोयल आदि श्री यमुनाजी॥ पाडर श्री स्वा
मिनी जी नासिका के भावतें॥ तातें सिनके फूल
बहोत होत हैं कदमके कुमारिका के कुचरूप॥ इत्या
दि भाव अपने हृदयमें विचारिके माला प्रभुको
धरावनी दोऊ भुजनमें दस अंगुली तामें दसो मुद
री रतन जडित धारन किए हें॥ ताको भाव यह हे
सो प्रकारके भक्त हस्तमें लिये रहत हैं॥ अपनत
नेहके वस होइके॥ छोडत नाहीं॥ हस्तकमल
के पासें आश्रय करि रहे हें॥ सो प्रभु मुदरी भाव
त हें॥ तब भक्त अंगुरीनमें मुदरी रूप हें॥ सो कपोल
को परस करत हैं॥ अधरके परस मिस अधरामृ
तको पान करत हैं॥ तातें अंगुरीनमें भक्त कहे हें
॥वाम बाहुतल वाम कपोल दसो अंगुरीनमें दसो
न धरें हैं चंद्रमारूप॥ ताकरिके कुभावरूप अध्यारो

भक्तजनके हृदयतें दूरि भयो॥ हृदयमें सीतलता भई॥
रसपान करिके॥ ताके ऊपर दोऊ हस्तमें कंकन हें॥ सो
श्री स्वामिनी जीनें ब्याह करिके अपने करके कंकन
जडाऊ पहिराये हें॥ ताके कंकनके पास जडाऊ पहुंची
हें॥ सो श्री यमुनाजी के भावतें रतनमय जात हें॥ ताके
पास मालीनकी पहुंची हें॥ सो श्री चंद्रावली जी अप
नें ब्याह करि भावतें दोऊ हस्तमें पहिराए हें॥ ताके पा
स सोनाके कडा हें॥ सो कुमारिका ब्याह करिके श्रीन
कुंवरजी के दोऊ हस्तमें अपने भावतें पहिराए हें॥ ता
करिके दोऊ रसको भाव प्रगट होत हें॥ रीत विपरि
त लयाको लकलामें रसके बंधन हें॥ सो बाजूबंदतें
रस प्रभाव अनुभव होत हें॥ सो बाजूबंद जडाऊ हें॥ त
यां सोनके हें॥ सो श्री स्वामिनी जी के भाव जडाऊमें
श्री यमुनाजी श्री चंद्रावली जी के भावतें॥ सोनामें
ताके कुमारिका के भावते हें॥ यह बाजूबंदके भावतें
विचारनो॥ हस्तमें मुरली प्रभु धारे राखत हें॥ श्री स्वा

स्वामिनीजी के तीन जवजेके कंठके ॥ सो गावत है वा
२३३ ते कछूक मुरलीको सुर मिलनत है ॥ ताते मुरली श्री
ठाकुरजी को परम प्रिय है अधर प्रिय धरत है ॥ सो
श्री स्वामिनीजी के भावते हस्त में राषत है ॥ श्री चं
द्रावलीजी के भावते कटि में राषत है ॥ कुमारिका
के भावते कबहू मुरलीजी श्री ठाकुरजी की आपु
न जावत है ॥ सो श्री ठाकुरजी के भावते अपनो अ
धरामृत मुरली द्वारा श्री ठाकुरजी को अनुभव क
रावत है ॥ मुरली में सप्त रंध्र है ॥ तामें उपर को मुख
रंध्र श्री स्वामिनीजी को रस पान अर्थ है ॥ दूब
धर रंध्र है तामें प्रथम श्री चंद्रावलीजी को रसपा
न अर्थ है ॥ दूसरो सोरह हजार अग्निकुमारि
का के रसपान अर्थ है चोथो रंध्र श्री गोवर्द्धन र
सपान अर्थ है ॥ पंचमो रंध्र सगरे पशु पंछी पां
नार्थ है ॥ छठो रंध्र देवतावो है ॥ देवतान सो भू
धो करि सगरे ब्रज की जनता ब्रह्म लोक पंच के

सगरी नूं स्थिर रसदानार्थ है ॥ वेनुनी तरते पोलो
कचो है ॥ संसार की जो कि कवै दिक वासना सब छूट
यते छुडायके केवल रस मत्त रसके अर्थे प्रग
पास आई तब श्री ठाकुरजी ने सुद्ध नाम मुरली को
दे षिके अपने सरूपानंद को भाव अधरामृत
लिये ॥ पाछे वेनु द्वारा सगरे ब्रज में दिए ॥ तब अग
वनो आपनो ज्या होइलो अंतको निजाव ॥ सोस
गरो जन अधरामृत के संबंध तें रसरूप होत भयो
॥ यह कहि यह जताए जो ॥ पुष्टि मार्ग में जीव श्री
आचार्यजी के शरण आइ मुरली की नाई अपने
मन में दास पदार्थ देह संबंधी जो कि कवै दिक धो
डिके भगवद धर्म में लागे है ॥ तिनही को मुरली की
नाई अधरामृत के रस की प्राप्ति होइगी ॥ या प्रकार
भावना करि पाछे चिंतन षन स्याम स्वरूप में
वस्तु की चिबुक पर बिंदु करत है ॥ ताको भाव
यह है ॥ श्री स्वामिनीजी अधरामृत को पान करत

भाव: हैं ॥ तवरसके आधिक्यतें रसवहतहे ॥ सो श्री ठा
२३४ कुरजी के मुखतें रस बहिकें ॥ चिबुक पर आवत
हैं ॥ तहां चिबुक के मिस यूंनू घन के रूप श्री
चंद्रावलीजी विराजतहे सो अधरामृत को
पान होउ जुगलसरूपकी प्रसादी करतहे ॥ ता
तें चिबुक भूषन श्री चंद्रावलीजी के भावतें जा
नियें ॥ ताके ऊपर तें बेसरि को मुक्ता धराईये ॥
सो श्री स्वामिनीजीनें अपनी नासिका में बे
सरि श्री ठाकुरजी को धराई है ॥ ताको सब दूल
हे अधर ॥ श्री ठाकुरजी के विवाफसकी साहै
हैं ता अधरामृत रस पान करिबेके अपप्रा
इवे छे हैं ॥ उज्वल शुद्ध भाव करिके ॥ सो अधराम
तको पान करि रसमें मगन होइ झूमतहें ॥ तातें
श्री स्वामिनीजी को भाव विचारनो अपनी बे
सरिमें एक चूंनी जडी हैं ॥ दोइ मोती लगे हैं अ
रस नाहें ॥ जो श्री स्वामिनीजी हैं ॥ तहां अध

रां पाबडो मोती जटकतहें ॥ सो श्री चंद्रावलीजी
के भावतहे ॥ उपर छोटो मोती हैं ॥ सो सारह हजा
र अग्निकुमारिका के भावतहे ॥ या प्रकार चारो जू
थपतिके भावतें भावना करीये ॥ ताके ऊपर तिल
कहै ॥ ताकी भावना यह है ॥ तिलक जडाऊ है ॥ कबहू
कस्तूरी को धारन करतहे ॥ कबहूं केसरि को धार
न करतहे ॥ कबहूं गोरोचन को धारन करतहे ॥ ता
को भाव बरनन करतहे ॥ केसरि को तिलक श्री स्वा
मिनीजी के भावतें लगावतहे ॥ प्रसादी कुंमकुमको
तिलक करी विरहतापको निवारन करतहे ॥ कस्तू
री को तिलक धारन करतहे ॥ सो श्री यमुनाजी के
भावतें ॥ जडाऊ भारी तिलक करतहे ॥ सो श्रुतिरूपा
के मुखिया श्री चंद्रावलीजी हैं ॥ तिनके भावतें धार
न करतहे ॥ गोरोचन को है सो सारह हजार अग्नि
कुमारिका को है ॥ तिनके भावतें धारन करतहे ॥
॥ इत्यादि भाव तिलक को करीये ॥ तिलक जबे

लिनी। श्री स्वामिनीजी के चरनारबिंद के आकार परम
२३५ सोभायमान हैं ॥ बिजुरी की नांई सोहत हैं ॥ यातें
तें श्री स्वामिनीजी नें जान्यो जो श्रीठाकुरजी रसि
क सिरोमनि हैं ॥ सो ब्रज में कोई गोपीजन नाइ
गी ॥ ताकि जो ये श्री स्वामिनीजी अपने चरना
रबिंद की प्रसादी तथा अपने उरस्थल की
प्रसादी कुंमकुम अपने चरनन की नांई श्रीठा
कुरजी के मस्तक पर धाप करि दियो ॥ ताक
रि यह जताए सगरे स्वामिनीन को जो कहा सबी
ब्रजभक्त श्रीठाकुरजी के संग बिहारत सो श्री
ठाकुरजी हमारे बस हें ॥ और श्रीठाकुरजी हू
जताए जो तुम सगरे ब्रज में फिरो परंतु हमा
रे ही कहावोगे ॥ तातें तिलक है अथवा श्री स्वा
मिनीने श्रीठाकुरजी के मुष चंद्र की सोभा अ
त्यंत बडी देषि है ॥ त्रिबलता की सगरी सोभा
सिमिटि के आइ रही हे ॥ सो ब्रज की गोपी।

की

अतिचंचल हैं में तिलक हूं रूप दियें श्रीठाकुरजी के मु
ष की सोभा हें ॥ ये श्रीठाकुरजी की सोभा कहत हैं ॥ श्रीठाकुर
जी के मुष की सोभा चुराइ न लेइ ॥ ताके अर्थ चोंकलगा
इ दियो अथवा दोऊ भोंह धनुष तो हुते ॥ तहां नैनबान
हू हे ॥ परंतु नैनबान पलकन के बस हे ॥ तातें श्री स्वामि
नीजी अपने सुतंत्र बान तिलक रूप देत भई ॥ तिन में
काहू को प्रतिबंध नांही ॥ तब श्रीठाकुरजी सुतंत्र बान
पायकें तिलक रूप अपने भ्रुकुटी धनुष पर धरिकें त्रि
लोकी जीती सगरे ब्रजभक्तन को जीती के अपने बस
किए ॥ तातें श्री स्वामिनीजी की आज्ञा में हें ॥ जानें जो
इनके प्रताप तें में सगरी स्वामिनीन कों जो जीतलयो हें
॥ या प्रकार तिलक की भावना करीयें ॥ पाछें दोऊ कर्न
में कुंडल धराईये ॥ कबहूं मकराकृत कबहूं मोराकृत
मकराकृत सो मीन जल ही में रहे ॥ तातें रसरूप ही मक
राकृत कुंडल हे ॥ और मोर कला करत हे ॥ तब मोरनी कों
रस की प्राप्ति होत हैं ॥ तातें मोराकृत कुंडलन को धराइ।

लिंना को ॥ यह भाव जताए जो ॥ ब्रजजनकन को रस दान को अ
२३६ नुभव होत है ॥ तथा कुंडल सांख्य योग को भाव प्रगट कर
त है ॥ अलकावली में मोती नको जर गूंथ्यो है ॥ सो श्री चं
द्रावली जी के भाव तें धारण किए हैं ॥ श्री चंद्रावली जी ने
अपनी बेंदी के मोती ताको जर करिके धरायो है ॥ म
स्तक पर पाग बहुत धरावत हैं श्री यमुना जी के भाव
तें ॥ मुकुट श्री स्वामिनी जी के भाव तें ॥ तातें श्री आचार्य
जी नित्य चंद्रिका को मुकुट करिके धरावत हैं मुकुट को
शृंगार रस रूप सर्वोपर है ॥ श्री स्वामिनी जी स्वरूप श्री आ
चार्य जी हैं तातें मोरपिच्छ को मुकुट धरावत हैं ॥ कुल्हे
श्री चंद्रावली जी के भाव तें धारन करत हैं ॥ कुल्हे उत्स
व अंग है ॥ तातें उत्सव में धारत हैं ॥ उत्सव को शृंगार सगरो
श्री गुसांई जी ने प्रगट कीयो है ॥ बागा बस्त्र उत्सव की
रीत ॥ सो श्री चंद्रावली जी रूप श्री गुसांई जी हैं ॥ तातें कु
ल्हे बहुत धरावत हैं ॥ सेहरा कुमारिका के भाव तें धा
रन करत हैं ॥ अग्नि कुमारिका है सो आगे के सूचवे

॥ तातें बेदमर्यादा व्याहु सबन बहुत प्रिय है ॥ यातें पति के
अर्थ कात्यायनी देवी को पूजन कियो तातें यह मंत्र ज
प ॥ नंदगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः ॥ या प्रकारतें प
तिभाव तें कुमारिका सेहरा धरावत हैं ॥ टोपी श्री यसो
दा जी के बालभाव तें धारन करत हैं ॥ ग्वाल पगा ग्वालन
के भावतें धारन करत हैं ॥ टिपारा तामसी भक्तन के मद मो
चन मर्दन करत हैं ॥ दुमाला राजसी भक्तन के मनोर्थ धा
रन करत हैं ॥ फेंटा सात्विकी भक्तन के भाव तें धारन करत
हैं ॥ इत्यादिक भाव विचारिए ॥ बेनी श्री स्वामिनी जी की
प्रसादी श्री स्वामिनी जी के भाव तें धारण करत हैं ॥ सिर
पेच सोंन को श्री स्वामिनी जी के भाव तें धारन करत हैं ॥ मी
ना को सिरपेच कुमारिका के भाव तें श्री यमुना जी सबन
के भीतर हैं ॥ सोने की कलंगी ॥ कुमारिका रूप है ॥ मोरप
क्ष की कलंगी श्री स्वामिनी जी के भाव तें हैं ॥ जडाऊ कलंगी
श्री चंद्रावली जी के भाव तें हैं ॥ तोर्रा श्री यमुना जी के भाव
तें धारन करत हैं ॥ दोऊ ओर कतरा टिपारे पर धरिये

लिना सो वांम अोर श्री स्वांमिनी जी की प्रभु रछा करत हैं ॥ श्री
२३७ स्वांमिनी जी के भाव तें ॥ दछिन भाग श्री चंद्रावली जी के
भाव तें ॥ श्री चंद्रावली जी की रछा करत हैं ॥ एक चंद्रका
श्री स्वांमिनी जी के भाव तें धारन करत हैं ॥ तीन चंद्रका
राजसी तामसी सातुकी भक्तन के भाव तें धारन करत हैं
॥ पांच चंद्रका चारो जूथपति श्री स्वांमिनी जी के भाव
तें चार ॥ एक श्री ललितादिक सकल व्रजभक्तन के भाव तें
धारन करत हैं ॥ या प्रकार श्रृंगार धराय चोकदार वागा श्री
स्वांमिनी जी को लहंगा ॥ घेरदार वागा श्री चंद्रावली जी
के भाव तें धारन करत हैं ॥ या प्रकार श्री ठाकुर जी के श्रृंगार
को बर्णन करि अब श्री स्वांमिनी जी के श्रृंगार को बर्नन
करत हैं ॥ इनको श्रृंगार चरण तें बिंदली करीये सो राति
को सिषा तें करीये सो नष पर्यंत ॥ सो विपरीत है ॥ तातें
सिषा तें बर्णन करत हैं ॥ मांग समारिके पाटी पारि सुं
दर फुलेल तें मांग में सिंदूर भरत हैं ॥ फुलेल श्री ठाकुरजी
को सनेह अरु स्पर्श सचिक्कन ॥ तातें परमफलरूप है ॥ सो

नासहित श्री स्वांमिनी जी अपने मस्तक पर धरत हैं ॥
॥ अप्रवास्यांमके सघन जो मे घको नांही श्री ठाकुरजी
तिनको सनेह करि मस्तक पर धारन करत हैं ॥ तिनको
फुलेल लगाइ कोकसी अपने दंतरूप तिनको अप्रचरा
मतसनेहरूप फुलेल सो पान करावत हैं ॥ तहां मांग में
सिंदूर भरत हैं ॥ अपने सौभाग रूप ॥ सो दोउ अोर के के
[illegible] मध्य श्री ठाकुरजी के हृदय में अप्रु श्री स्वांमिनी
जी विराजत हैं ॥ जैसे नारायन के हृदय में लक्ष्मी
जी को चिन्ह है ॥ तैसे श्री स्वांमिनी जी के माग के बीच सें
दुर के मिस प्रभु के हृदय में है ॥ तहां घूघरारी अलक
क होइ रही हैं छोटी छोटी सो भवररूप श्री ठाकुरजी
अनेक रूप होइ मुषकमल को रस पान करत हैं ॥ अोर
दोऊ अलक बडी सो कपोलन पर होइके कुच के ऊपर
आइ सो भादत हैं सो केसरूप श्री ठाकुरजी हैं ॥ सो दोउ
भुजा ऊपर तें नीचे करिके कुचकलस के रस को अनु
भव करन को लटकि रही हैं ॥ यह भाव विचारनो ॥ के

मिनासससमालिकें सखिननने सुंदर फूलनसौं गूंथेहें अरु
२३८ कमें ॥ सोके सरूप श्री ठाकुरजी हें ॥ सेंदुर मांगमें श्री
स्वांमिनीजी एसें जुगलसरूपको सखीजननें मानापं
हिराईहें ॥ तथा फूलरूप श्री चंद्रावलीजी जुगलस्व
रूपकी सेवा करतहें ॥ ताके पीछें सखिनने सगरें व
नासवारिकें जूरा गूंथिके जूरा बांधे हें ताकरि यहभा
व विचारिये ॥ नारारूप श्री स्वांमिनीजी और केसरूप
श्री ठाकुरजी जुगलस्वरूप मिलिकें रीति विपरीत
रमण करतहें ॥ तातें कहूंके सखीयें ऊपर कहूं नारा गुह
सखीजन फूल टोइ दूरि तें जो ताको अपनो भाव कर
तहें ॥ ता जूराके ऊपर वेनी लगी पीठि लाई टकत हें
॥ ताके नीचें सोनके रवा स्यांम रेसमके ॥ पाटमें फुंदना
लगे हें वेनीमें फूल गूंथे हें ॥ ताको भाव कहतहें रवा
सोनके श्री स्वांमिनीजी रूप हें ॥ फुंदना स्यांम पाटके
हें सो श्री ठाकुरजी रूप हें ॥ सो मानों कनकके खंभ रू
प श्री स्वांमिनीजी के श्री अंगको पीठि तामें सरू

पसुरति हिंडोर फूलति हें ॥ तातें वेनी रवा पीठि ऊपर वा
रंवार चंचल होतहें वेनीमें चारु रवा हें ॥ तामें चारो में
स्यांम पाटके ॥ फोंदा हें सो चारो जूथपति श्री स्वांमि
नीजी के विहारको भाव सूचन करतहें ॥ तथा वेनीमें
हूं फूल गूंथे हें ॥ सो फूल सखिनने सवारे हें ॥ अथवा फू
लरूप व्रजकी सकल स्वांमिनी सखी आदि यहली जो
सबकी अनुभव करन आई हें ॥ यह भाव कहिकें ॥ यह ज
ताए जो सगरी स्वांमिनी सखी व्रजमें हें ॥ ते सब श्री
स्वांमिनीजी तें प्रगट भई हें ॥ यह भाव विचारनो ॥ और
श्री स्वांमिनीजी के केसन पर वांम दिसा सीस फूल ज
डाऊ धारनकी एहें ॥ और मांगके सिंदूरके दछिन दिसा
चंदा जडाऊ धारनकी एहें ॥ ताको अभिप्राय यह हें जो
श्री ठाकुरजी के करन फूल दाऊ ताके भावते हें अथवा
केसरूप श्री ठाकुरजी मांगके सिंदूररूप श्री स्वांमिनी
जी हें ॥ फूलरूप श्री चंद्रावलीजी इनको विहार होइ ॥ त
हां अपनो लिक चंद्रमा सूर्य चहाये ॥ तातें सूर्यरूप सीस

जिनाः फलन दिवसको जो जासहामकरस उदीपनहे ॥ और
२३६ चंद्रमात्रिकी जो जाको उदीपनहे ॥ तथा सो सफल
रूप सूर्यकी पुत्री श्री यमुनाजी ताके भावतेहे ॥ चंदा
रूप कुमारिकाके भावतेहे ॥ या प्रकार चारो यूथप
तिके रसको भावहोतहे ॥ ताके बीच दोऊ भोंहध
नुषकी नाहीं बांकी सो भादतहे ॥ सो कामदेवके म
दको दूरिकरि श्री ठाकुरजीके ऐस्वर्यके मदको दू
रिकरतहे तासमय श्री स्वामिनीजी रंचकहू रूस
होइ क्रोधकरि टेढी भोंह करतिहे ॥ तासमय श्री ठा
कुरजी अपने ऐस्वर्यको भूलिके [illegible]
न होइ हाथजोरिके बिनती करी प्रसन्न करतहे ॥ जा
व मानादिक करि अत्यंत क्रोधकरि भृकुटी टेढी करा
तहे ॥ तब कहाकहनो सखीको रूप धरि चरनकमल
पकरिके मनावतहे ॥ अपया व्रजमे कोटानकोटि
स्वामिनीहे ॥ तिनहूके सौंदर्यमदकू हरतहे ॥ ताभृ
कुटीके बीच जडाउ तिलक परमसोभा[illegible]दतहे ॥ ता

केपासकस्तूरीकी स्यामबेंदी सोहतहे ॥ तथा सोनेकी
बिंदि मोतिसहितहे ॥ ताको भावयहहे ॥ कस्तूरीकी बें
दी सो मधुकररूप श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजीके मु
खकमलरसके पानकरनको आइरहेहे ॥ तब श्री स्वा
मिनीजी जानेजो श्री ठाकुरजी सर्वरसके भोक्ताहे ॥
सो व्रजकी स्वामिनी जेहे ॥ तिनके लीये मलिकहूं
अपना जाइ ॥ ताके लीये आपु सगरी स्वामिनीके मू
सरूप देखिचाहे तिनके रूपको प्रगटकरें ॥ तातें जडाऊ
बेंदी श्री चंद्रावलीजीको रूप धरें सोनेकी बेंदी कुमारि
काके भावतें धारनकरतहे ॥ मो ताकी बेंदी श्री यमु
नाजीके चित्रविचित्र रूप धारनकीएहे ॥ ताकरि
चारि स्वामिनीके रसको अनुभव श्री ठाकुरजी कर
तहे ॥ और स्वामिनीजी टेढी बेंदी धरतहे ॥ सादोऊ
बेंदीनके बीच बेंना जटकतहे ॥ सो कबहू जडाऊ बेंदी
धरतहे ॥ सो श्री यमुनाजीको जडाऊ नाहटहे ॥ कबहू
मोतीकी बेंदी धरतहे ॥ सो श्री चंद्रावलीजीके भाव

निमातेंकबहूंसोंननेकोवेंदिधरतहें॥ सोसोरहहजारकुमारि
२४ कानेंभावतें॥ तिनसववेदांनकें विचवेंनाजटकतहें सो
श्रीठाकुरजीकेभावतेंरसपानकरिदेहानुसंधानभूल
गए॥ मत्तहोइकिनारपरलटकिरहेहें ताकोभावयह
हें॥ मुख्यरसश्रीस्वामिनीजीकेमुषकमलकोअत्यं
तमधुररसकोपानकरनोहें॥ पैरंतुवीचविचकदुस
त्तिअमलरसस्वादिकहें मधुररसकेभावकोवहुलव
ढावतहें॥ तातेंश्रीयमुनाजीमेंअमलरसकुमारिका
येकदुरसश्रुतिरूपामेंतिक्तमांलिनांतिसोजारेना
वकर्त्तव्यहें॥ वाहरप्रगटकरवेकोवोनाकोआश्रयनाहीं
हें दोऊश्रवननमेंकबहूंरूमिकासहितकबहूंकरनफूल
कबहूंतरकुलीहूस्यादिकधारनकरतहें॥ टेढीवडीज
डाऊश्रीयमुनाजीरूपकरनमें जोटकरतहें॥ तामंजारूप
रसपानकरिमग्नहोइनित्यकरतहें कर्णफूलरूपश्री
चंद्रावलीजीहें॥ औरतरकुलीरूपसोरहहजारकुमा
रिकाहेंवयअवस्थामेंसर्वस्वामिनीजीतेछोटीहें

दोऊनैनकमलअरुनस्वेतडोरातामेंसुंदरअंजनवि
एहें॥ तामेंअंजनवनावहें॥ कछुकहतहें॥ नैनमेंस्वेतडो
राश्रीचंद्रावलीजीरूप॥ अरुनडोरेंकुमारिकारूप
॥ स्यामफूलरीश्रीयमुनाजीरूप॥ तामेंअंजनअन्यरूप
श्रीठाकुरजीहाइचारोजूथपतिनकेरसकोअनुभ
वकरतहें॥ तहांदोऊनैनतहें॥ दोऊकर्णमेंकर्णफूलहें
॥ ताकोरिव्यापिवैकुंठकीलीलाओरइहांव्रजकीदो
ऊलीलाकोअनुभवश्रीस्वामिनीजीश्रीठाकुरजी
कोकरावतहें॥ मतिकबहूंप्रोरठोरजाइ तातेंश्रीठा
कुरजीव्यापिवैकुंठकीलीलाव्रजकीलीलादोऊने
रकेंसगरेभक्तनकेरसकोअनुभवश्रीस्वामिनीजी
केअंगअंगमेंकरतहें॥ तातेंश्रीठाकुरजीश्रीस्वामि
नीजीकेरोमरोमपरजुन्याइकेपरवसहोइरहेहें॥ सुं
दरनासिकापरजकवेसरितथांसुंदरनथविराजमा
नहें॥ सोनथनाहींहें श्रीठाकुरजीकेमनरूपअत्यं
तचंचलहें॥ सगरेव्रजभक्तनकेरसपानकरन

लिखा में अत्यंत चलायमान हैं ॥ ता पंछी के पकरने कों काम
२५१ देवरूपी जाल बिछाइ राखी हैं ॥ सो श्री ठाकुरजी को
मन पंछी रूपी अधर बिंब के रस पान करन को आयो
॥ सो नथ रूपी जाल में मोती चुंनी रूपी फल को नागव
रन लाग्यो ॥ तब श्री स्वांमिनीजी नें नथ रूपी जाल को
नराइ मानरूप करि श्री ठाकुरजी के मनरूपी पंछि को
बांधि लियो ॥ जहां जाको मन बंध्यो तहां सगरो देह
प्रान धन सब बंध्यो ॥ तातें श्री ठाकुरजी श्री स्वांमि
नीजी की नथ की सोभा देखि कें तन मन धन अपनो
पर बस होइ गए ॥ त्यांन नथ में मोती चुं[illegible] हैं ॥
मोती रूप बडे बडे ॥ श्री चंद्रावली जी अ[illegible]
नायकाके मुखियाके भावते गोलाकार श्री यमुनाजी सों
नैं की रत्न मध्य आइ हठरूप हैं ॥ और चुंनी रूप सोरह है
जारकुंमारिका के मुख्य या हैं ॥ अलौकिक सुघरूप श्री
ठाकुरजी धारन करि अधर बिंब के रस कोल पान प
रूप सगरी स्वांमिनी के रस कों पान करत हैं ॥ अथ वासु

करूप अथवा तिलक के फलरूप श्री ठाकुरजी कौन
यरूप नस अधरामृत के रस कों लेकें उन्मत्त होइ घूमि
रहे हैं ॥ परस्पर दोउ रस पान करत हैं ॥ ता पाछें ठाढी
चिबुक पर स्यांम बिंदु अलकत सो भादेल है ॥ ताको भाव
यरहें ॥ श्री ठाकुरजी छोटे नवर को रूप धारन करि चिं
बुक परयातें बिराजे हैं ॥ श्री स्वांमिनीजी दूध दही जार
सकोपजकर सोव हैं कें ॥ चिबुक पर आवे ॥ तातें श्री
ठाकुरजी उह प्रसादी अधरामृत के रस के पान करन
साथ चिबुक पर बिराजी रहे हैं अब दोउ भुजानके
आभूषन को भाव कहत हैं ॥ बाजूबंद जडाउ पहिरे हैं
सो ताके नीचें बरा गोल पहिरे हैं ॥ सो श्री ठाकुरजी की
रीति बिपरीत अनेक रस के बंधन के भाव को सूचन क
रत हैं ॥ दछिन दिसा के बाजू बरा बिपरीत रस को भाव
प्रगट करत हैं ॥ बांम दिसा के बाजू बरा रीत रस को भा
व जनावत हैं ॥ ताके नीचें कंकन पहुंची पाछेली चूरी
धारन किए हैं चूरी सो नागपरूप हैं ॥ कंकन श्री ठाकुरजी

तिना नें व्याह षेल करिकें कुंजमें पहिराए हें ॥ पहुंची स
२४२ गरी स्वामिनी मिलीकें श्री स्वामिनी जी सों प्रार्थ
नां करी जो श्री पुरुषोत्तम के सर्वांग रस के अनुभ
व करन में एक तुमहीं पहुंची हों ॥ अब कृपा करिकें
हमहूं कों पहुंचावो ॥ हम तुम्हारे सरन हें ॥ तब श्री
स्वामिनी जी सबन कों पूर्ण पुरुषोत्तम के अधरामृ
त कों रस चषायो ॥ तब सगरी स्वामिनी मिलिकें प
हुंची धराए ॥ और पछेली श्री चंद्रावली जी अपनों
मनोरथ को धरायकें यह भाव जतायो जो तुम्हारी
धरें हम कों रस की प्राप्ति हे चूरी सो नाग[illegible] श्री जमुना
जी की लहरि रूप हें ॥ तामें श्री ठाकुर जी सदा विहार
करत हें ॥ कंकन रूप बंधन करिकें श्री ठाकुर जी सदा
हस्त में राषत हें ॥ कंकन के तले ऊपर हस्त सांकर कों
फूलन हें ॥ दस सो अंगुरीन में दस मुंदरी धराजत हें ॥
हस्त सांकल सगरी अंगुरीन के बीच पहुंची पर
लटकि रह्यो हें ॥ सो ताकरि श्री ठाकुर जी के कर सों

करपकरिकें बंधन भाव सूचन करत हें ॥ ताके पास
दसो अंगुरीन में दसो मुंदरी हें ॥ सो नौ रस के अलौकि
क भाव दिषावत हें ॥ ताहू में दसमो रस अपनों श्री ठा
कुर जी कों अनुभव कराइ यह जताए जो तुम्हारे ॥ पा
स नौ रस हें ॥ सो यह हमारे कहा हे और दसमो रस तुमा
रे कहूं नांहीं हे ॥ सो तुम लेहु ॥ तब श्री ठाकुर जी दसमो
रस को [illegible] करिकें श्री स्वामिनी जी के वस होत भ
ए ॥ [illegible] दसमो रस को पार नांहीं पायो ॥ नित नयो
रस छिन छिन में पान करत हें ॥ तातें दसमो मूंदरी दस
रस स्वरूप हे ॥ और कंठ में तिमनियां जी गांठि पाट
की सोहत हें ॥ तहां कांठजी गांठि रूप श्री ठाकुर जी ॥ सो
नें के मनी यां रूप श्री स्वामिनी जी जुगल सरूप एक
ठौर हें ॥ तीन मनी यांहे सो त्रिविध भक्त इहां ते प्रग
ट भए हें ॥ राजसी तामसी सातुकी तिन कुं श्री स्वामि
नी जी के संबंध ते प्रभु का लिगांठि रूप प्रभू हाइ अ
पने रस को पान करावत हें ॥ त्रिविध भक्त कों रस

नियाकों पांनकरतहें॥ अपवावी चकोंमनियां श्री प्र
२४३ मुनाजी रूप दक्षिन दिसाके मनी यां श्री चंद्रावली
जी रूप॥ वांम दिसके मनी यां सो रहट जार कुं माह
कारूपहें॥ तातें प्रभुकाजो गांठि॥ पाटरूपहोइ मनि
यांके मिसभक्तनके हृदयमें पे ठिरहेहें॥ ताकेनी
चें उरस्थलपर स्यांम कंचुकी कसिरहेहें॥ सोकं
चुकी रूप श्री ठाकुरजी स्यांम लपटि रहेहें॥ कंचुकी
केबंदरूप श्री ठाकुरजी की भुजाहेसो पीठपर
बंधवांधेहें॥ सो अपने हाथसों हाथ बांधि गा
ढो आलिंगन किएहें॥ अपवा कंचुकी (?) हें
॥ श्री ठाकुरजी श्री स्वांमिनीजी के हृदयकों (?)
आसहें॥ तिनकी सांई हृदयपर आइ ऊपर साडी
के अंचलके ऊपर होइ श्री अंगकी कों सिमल (?)
लहें॥ ता कंचुकी के ऊपर चोकी विराजमान हें॥
॥ सो निकुंजकी सिज्यारूपहें॥ तातें श्री ठाकुरजी
के ऊपर चोकी हें॥ दोऊ परस्पर निकुंज विहार

जी जाके चावतें धारन किएहें॥ तहां चोकी के निच (?)
ट जडाऊ धुकधुकी हें॥ तामें स्यांम पाटसों परो हृ (?)
हें॥ सो धुकधुकी के मिसतें श्री ठाकुरजी हृदयमें
विराजतहें॥ स्यांम पाट कंठमें हें॥ सो दोऊ भुजा श्री
ठाकुरजी कंठमें बेलि करि हृदयसों लागि रहेहें॥
पदभाव धुकधुकी को विचारनो॥ मो तिनकी सुंदर
माला विराजतहें॥ सोनेकी चंपकली हसुली हमे
ल तिलरी दुलरी इत्यादि गहने कंठमें विराजतहें
॥ सो स्यांम कंचुकी रूप श्री ठाकुरजी कों पूजन श्री
स्वामिनी जीनें कियो हें॥ चंपकली सोई मांनो दोप (?)
मालिका कीनी हें॥ मोतिनकी माला सोई सहस्र प (?)
ल समर्पन किएहें॥ हमेल सोई मांनो पांनपत्र सम
र्पे हें॥ तिलरी सोई मांनो अछिलडा (?) रहे हें॥ दुलरी सो
ई मोतिनकी माला जलधारा डारे हें॥ हसुली सोई चं
दनको तिलक टेढो (?) हें॥ सारी को अंचल ऊपर
सोई बस्त्र ढाए हें॥ या भावतें प्रभुको हृदयमें रा

भाव: खिके श्रृंगार किए हैं ॥ ताके नीचे कटि किंकिनी है ॥
२४४ सो श्री ठाकुरजी के कटि में जपटि रहे हैं ॥ सो प्रसन्न होइ
के ॥ विहार समय बाजत है ॥ सो श्री ठाकुरजी गान क
रत हैं जहंगा पहरे हैं ॥ सो श्री ठाकुरजी के वागा को घे
रहे साडी है सो श्री ठाकुरजी के श्री अंग को जो लांव
रहे ॥ केसरी साडी श्री ठाकुरजी को पीलांबर है ॥ लाल
साडी सो श्री ठाकुरजी को सनेह है ॥ हरी सारी मे दो स
सरूप को एकांत है ॥ स्याम श्री ठाकुरजी ॥ पीत श्री स्वा
मिनी जी दोऊ मिलि के हरो होइ है ॥ इत्यादिक भाव
विचारि के साडी वस्त्र पहिरे हैं चरन में नूपुर धरे
रूप गपांन अनवट बिछिया नहिं या धारन किए
हैं ॥ घूंघरू है सो श्री ठाकुरजी के करन में पहुंची है ॥ नं
पूर है सो श्री ठाकुरजी के भुजान में टिकरी दारवाजू
हैं ॥ पगपांन है सो सीतकाल में श्रृंगार में श्री ठाकुरजी
मस्तक पर धरत हैं अनवट है सो श्री ठाकुरजी के ह
स्त के अंगुष्ठ है ॥ अनवट के ऊपर फूल है सो श्री ठा

कुरजी के अंगुष्ठन के नख है ॥ बिछिया श्री ठाकुरजी
की नासिका को भाव है ॥ नहिं या श्री ठाकुरजी के मुक
की टोपी को भाव है ॥ श्री स्वामिनी जी के चरन तल
अस्पंत अरुन है ॥ सो श्री ठाकुरजी के अधर बिंब को
भाव है ॥ या प्रकार भाव सहित नखसिख ते नख पर्यंत श्री
स्वामिनी जी के श्रृंगार की भावना करनी ॥ या प्रकार दो
ऊ युगल सरूप को श्रृंगार धराइ पाछें ठाढे सरूप हो
इ तो वेनु वेत्र धराइये ॥ श्री नवनीतप्रियजी होइ तो
वेनु पास धराइये ॥ वेत्र नांही ॥ वैकुंठ सरूपानंद को
दान व्रजजन कनको करना अर्थ है ॥ वेत्र ब्रह्म मर्यादा के
रूप मक्त है ॥ अब्यास वक ब्रह्मा भावना रसादि इंद्रा
दिकको रससरूप सरूप को दर्शन होइ ॥ ताके अर्पर्थ ठा
ढे सरूप में वेत्र भाव रूप कह्यो है ॥ और श्री नवनीत
प्रियजी तनी यांसूं पनतौं धौं का छनी सगरी मर्यादा
बस्त्र को त्याग कियो ॥ ताके टिके के बलपुष्टि नलि
के रस अनुभव करावत हैं ॥ सगरे गूरजन श्री यसो

भाव: दाजीके आगे ब्रजभक्त गोदमें लेहूदयसों लगाइ
२४५ चांपतहे और चुंबन करतहे ॥ ताकरि मर्यादा सग
रीकों त्याग कीयो ॥ तातें श्री नवनीत प्रियजी श्री
बालकृष्णजीके सरूप आगे मर्यादाके न तकहे ॥ प्र
सादि लिनालिंदु द्वाहि आ पुहीतो ॥ यारसके ॥ यो
गपनांहीं ॥ तातें नांहीं आवतहे ॥ तातें बाललीलाके
सरूपमें वे ननांहीं धरतहे ॥ पाछे दर्पन दिखाइये
सो श्री स्वामिनीजीको ॥ श्री अंगको प्रतिबिंब हेता
तें आदर्सनि हे यह नाम कहतहे ॥ सो श्री स्वामिनी
जीके आदर्समें अपनो सर्वांग श्री ठाकुरजी
देखिके बहुत प्रसंन होतहे ॥ श्री स्वामिनीजी आ
पने आदर्समें दोउ स्वरूपको देखिके बहुत प्रसंन
होतहे ॥ अनेकजी जाको समस्त होतहे ॥ अथ बादो
कु सरूपके मस्तकको शृंगार देखिके बहुत प्रसंन हो
तहे ॥ अथवा मस्तकको शृंगार नासिकाको शृंगार
अपनको दीसत नांहींहे ॥ सो दर्पनमें आपने सर्वां

गशृंगार देखिके प्रसंन होतहे ॥ फाहेते श्री ठा
कुरजीके शृंगारमें श्री स्वामिनीजी हैं ॥ श्री स्वा
मिनीजीके शृंगारमें श्री ठाकुरजी हे ॥ तातें अ
पने अपने भावसुं देखिके शृंगार देखिके अनेक
भावप्रगट होतहे ॥ या प्रकार शृंगार कियो होइ
सो मनुसा देखिताको फिरि चरणपरस करे ॥ याको
भावसुं चरणारविंद भक्तिरूपहे ॥ चरनके स्प
र्सतें बढे मनको आनंद होइ जैसें पुष्टि
मार्गमें भागवतीय जनमें मुख्य श्री गिरिराजजी
हें ॥ तातें हरिदासवर्य इनको नाम है सो जब श्री गोव
र्द्धनजीको चरणारस्पर्स होतहे ॥ तब आनंद पाइ द्रवी
भूत होतहे श्री भागवतमें कहेहे ॥ हंतायमद्रिरबलाह
रिदासवर्यो यद्रामकृष्णचरणस्पर्सप्रमोदः ॥ इतिवा
क्यात ॥ राग कान्हरो ॥ धनि धनि धनि हरिदास
राइ सो नुज सेवा करत सकल अंग तातें बलमोहन
मनभाई ॥१॥ कंदमूल फल भेट धरत सिलासिंगास

लैंमा-नरु चिरवनाई॥ कों मलअन गाइन चरिवेकोसीत
२४ई लसुषफरनो भुवहाई॥ २॥ खिखि धिके लिकीडलजु
सखियनसंग छिनु उतरत छिनु चढत जु भाई॥ राम
कृसके चरनपरसिके पुलकित पहो(पल रहत सदा
ई॥ २॥ इनकोभाव कहा जो वरनोंके कोमल करलीनो जु
गनाई॥ प्रेममुदित यों कहति गोपीका गोविंदइन
परवलिवलि जाई॥ ४॥ याप्रकार चरनपरसते पुल
कित गिरिराजजी होत है तैसेंही पुष्टिमार्गीय वै
ष्नवश्रृंगारकरिदर्पनदिषाईके चरनपरसकरे॥
पाछें माला फूलनकी वडी करनी काहेते फूलन
की मालामें सगरे व्रजसंबंधी सवभक्तनको भाव है
॥ तातें आगें श्रृंगारभोग जाकों गोपीवल्लभ कहत
हें॥ सोमुख्य श्रीस्वामिनीजीके मनोरथकीसामि
ग्री है॥ ताहीतें गोपीवल्लभनाम है॥ तातें मालारूपअ
नेकभक्तनके आगें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी
के रसमें लज्जारसतो नाथ होइ है॥ ताके जो ये फूल

की माला वडी करत हें॥ गोपीवल्लभ याश्लोककर
नावतें चरनों निमंत्र प्रातर्प्यो निजहृदयनाथं ति
रूपमा॥ इतिवचनात्॥ पदिस्नानव्याजात्तरक्षित
नयालीरमहलि॥ ध्रपांतु प्रांलेसो चिलखिखिधि
सु वस्तू निमुखि॥ याप्रकार श्रीस्वामिन्याष्टकमें स्वा
मिनीस्तोत्रमें श्रीगुसांईजी कहे हें॥ तातें श्रृंगार
भोगको प्रकार वरनों और श्रृंगार होतमें भोगकी
कटोरी पास धरी रहे॥ सोकहत हें॥ एककटोरीमें
मिसरीकी॥ तथ्या जड आलो रहे॥ केवल षांड
की वस्तु होइ॥ ताको मिठाई कहत है॥ गुलाबी बतासे
गिदोरा आदि॥ सो श्रीस्वामिनीजीको अधरामृत
केवल मिष्टजामें कछू मिलोनी नाहीं॥ मवाकीक
टोरीमें वादाम किसमिस॥ छुहारागिरी मिश्री केटू
क पिस्ता आदि तामें मिश्री श्रीस्वामिनीजीको अ
धरामृत॥ वादाम श्रीस्वामिनीजीके दंत॥ किसमि
स कुंमारिकाके दंत॥ पिस्ता अलिरूपामें श्रीचंद्राव

निआ जी जीके दंतगिरी श्री यमुना जी को अधरर
२५७ सषा रिके सगरी व्रजकी स्वामिनी तिनको अध
रामृत ॥ जडूआ श्री स्वामिनी जीके कुचके भावतें
या प्रकार सगरी स्वामिनी नके रसके भावते अ
नुभवकरत श्रंगार धरावत हैं ॥ श्रंगार पीछें
श्री वल्लभकुलके गोपीवल्लभ वे सबके श्रं
गारभोग ॥ तामें अनसषडी में पूरी मेदाकी दो
इ दोइ भांतिकी ॥ एक घरघरी एक नरम पूरी चूं
की घरघरी पपडी मेंदाकी नरम श्री स्वामिनी जी
के मनोरथकी ॥ घरघरी मेदाकी पूरी श्री चंद्रावली
जी के मनोरथकी ॥ चूंनकी घरघरी कुमारिकाके
मनोरथकी ॥ पपडी श्री यमुनाजी के मनोरथकी
कटोरी एक दहीकी ॥ १ ॥ कटोरी ॥ १ ॥ संधानो ॥ कटो
री ॥ १ ॥ बूराकी ॥ कटोरी ॥ १ ॥ आद्या दूध तथा बारी
दूध बारी श्री स्वामिनी जी को मनोरथ ॥ दही श्री
चंद्रावली जी को मनोरथ ॥ बूरा श्री यमुनाजी को

मनोरथ ॥ संधानो कुमारिकाको मनोरथ में वातव
है बहुत सीतकाल ॥ अनसषडी के दोइ तथा एक
साक ॥ यह व्रजकी सगरी स्वामिनीनको मनोरथ है
॥ तथा गोपीवल्लभमें सषडी बनि आवे तो धरे ॥
नित्य नवने तोर विवार तथा द्वादसी को धरे ॥ भा
त को डबरा एक ॥ दारि को डबरा एक पापर एक दो
इ सषडी साक ॥ एक कटोरी में घी ॥ घी श्री स्वामिनी
जी को सनेह ॥ भात श्री चंद्रावली जी को हास्य ॥ दार
श्री यमुना जी को प्रेम ॥ पापर कुमारिकाको सी
तकार साक सगरे स्वामिनी व्रजकी तिनको प्रेम
॥ डबरा श्री चंद्रावली जी के कर सो नेको श्री स्वा
मिनी जी के रूपैकी श्री चंद्रावली जी के ॥ सो साके
सषी जनके ॥ रोगके दूति जनके ॥ पातरके पुष्टि
मार्गीय भगवदीय बना र्यती हैं तिनके ॥ भाव भा
वते भोग सरा दू आन्यवन मुषवस्त्र करि दो यव
री आरोगाइये ॥ बारी को पात दो हिनी हिस्सध

लजारीये॥ सोदिन भाग श्रीचंद्रावलीजी विराजत
२४८ हें॥ सोदाऊसरूपकों बीरी अरोगाइ आरोगावति
हें॥ यह भाव विचारनो पाछें चोकी भागकी धोइ
मंदिर वस्त्र देतहें सो सारह हजार कुमारिकाकी
सेवाहे॥ तापीछें भावना यह करीये॥ प्रभुमात्रच
रणकी आज्ञालें द्वारपर षेलन जातहें तब श्री
यसोदाजी श्रीदामा आदि सषाकों सो पिदेत
हें तब श्रीठाकुरजी द्वारपर पधारिकें अपने
जनकों दरसन देतहें॥ काहूकों बीरी देतहें॥ का
हूंकों फूलनकी माला देतहें॥ काहूंकों बीरीसों
समाधान करतहें॥ काहूकों नेत्रनतें समाधान
करतहें॥ इतनेमें व्रजभक्तनके भावसों मिल्यो
सों ग्वाल आइके श्रीठाकुरजीसों आइके प्रार्थ
ना करतहें जो अब गोदोहनको समय भयोहे॥ ता
तें गाइनके॥ षरिकमें पधारि गोदोहन करीए॥ त
हां ~~गाइनके षरिकमें पधाइ~~ घे याकरेंगे सो

आरोगियो ताकरिकें सषानके संग मद्ध पुकूमें चलहे
इगो॥ यह सुनिकें व्रजभक्तनके हृदयको अत्यंत आर
तिजानी श्रीठाकुरजी षरिकमें पधारे तहां घर घरतें स्वा
मिनी गाइ दोहनके मिस दोहनी लें घरीकमें आइ रहीहें
पहिलेंतें श्रीठाकुरजीके पधारिवेको मारग देषतहें सो
प्रभुबारे षिक एकही बार सगरी गोपी दोहनी लेके ठा
ढीहें॥ अपने अपने भावतें श्रीस्वामिनीजीकों प्रार्थ
ना करतनहीं॥ प्रथम हमकों दुहि दीजें॥ हमकों घरमें ब
हुत कामहे॥ या प्रकार भाव सहित सगरी गोपीनके व
चन सुनिकें श्रीठाकुरजी नेत्रनको कटाक्ष करि सग
रे व्रजभक्तनको सावधान॥ पाछें अनेक रूप धारन
करि सगरी गाइनको दोहन करतहें॥ सगरे व्रजभक्त
नकों आनंदको दान करतहें॥ तब गोपीजननें विन
ती करी जो ग्वाल लोगजी जें॥ तब डवरामें तातो दूध
करि दूधमें बूरा मिलाइ पाछें रूपेकी कटोरीतें दूध
सीरो किजे॥ पाछें आरोगन लाइक दूध होइ तब सि

मिना ह्रासन पास जाइ॥ पांनी को हाथ देंइ जाइके फेनसों
२४९ नेके पात्र तथा रूपे के पात्र में धरिकें आरोगाईये॥
॥सो श्री स्वांमिनी जी को अधरामृत॥ पाछें आचव
न अनूं पान याते सगरो श्रम दूरि होइ मुषवस्त्र श्री
स्वांमिनी जी के अंचल के भावतें॥ बीरी आरोगाईये
॥यह ग्वाल के भोग की भावना करनी॥ प्रसिद्ध ग्वाल
भोग धरिवे को वे सब को अधिकार नाहीं है॥ भावना
मन के शुद्ध भये विना भावना सिद्धि होइ नांहीं॥ जब
मन शुद्ध भयो तहां सगरी जो जाको अनुभव होइ॥ ता
ब सगरी वस्तु की योग्यता है॥ तातें भाव [illegible] जो जान
आवे ताको दोस कछू नांहीं है॥ अब ग्वाल भोग पाछें
हू आरोगत हैं॥ सो श्री यसोदा जी वात्सल्य रस के भाव
सों श्री ठाकुर जी कूं पुत्र जो निःप्रपंच जहां होइवे के जो
ये सो रहै हजार कुमारिका हैं तिनसों कहतें हैं॥ जो जहां
तांई राजभोग की सांमिग्री सिद्धि होइ तहां तांई तुम घै
या करिवे मेरे॥ पुत्र को आरोगावो सब कुमारिका तातें

दूध में बूरा डारि मध्य में मिलके॥ फेन सोंने की कटोरी में
श्री ठाकुर जी को आरोगावत हैं॥ सो श्री यसोदा जी तोय
ह जानत हैं॥ जो मेरे पुत्र को घैया आरोगावति हैं॥ परंतु
इहां कुमारिकान में श्री स्वांमिनी जी को भाव है॥ तातें श्री
स्वांमिनी जी के अधरामृत को पान श्री ठाकुर जी करत हैं
या प्रकार की भावना नंददास पर की जो जामें विचारिये
॥पाछें पालना नित्य झूलत होइ तो झुलाईये॥ पालनां
को भाव जन्माष्टमी के उत्सव में कहे हैं॥ तहां उत्सव के
दिन विस्तार भारी है॥ नित्य को साधारन प्रकार है॥ तातें
कहत हैं॥ मात्र चरण श्री यसोदा जी के भावतें पालनां
झूलत हैं॥ तथा श्री यसोदा जी के घर कुमारिका हैं ति
नको श्री ठाकुर जी में पति भाव है॥ तातें कुमारिका पा
लनां के मिस हिंडोरा षाट विछावत हैं॥ ता पर श्री ठा
कुर जी को पधराय विहार करत हैं॥ अथवा श्री स्वा
मिनी जी श्री ठाकुर जी के शृंगार धरावन को श्री यसो
दा जी के बाल भाव सों आवत हैं॥ तातें पालनां के मिस

सिंगारकूं जनकों श्रीठाकुरजी सूं अनेक लीला करत हैं ॥ याही
२५. प्रकार श्रीस्वरूपा श्रीचंद्रावलीजी जो गाइ दुहावन दधि
बेचनके मिस आइ प्रभुके संग जो लीला करत हैं ॥ या प्रका
रसगरी ब्रजकी स्वामिनी जो हैं तिनको विरहताप दू
रि होत हैं ॥ तातें श्रीगुसांईजी नें पालनाके कीर्तन
कीये हैं तामें कहे हैं ॥ प्रेंखपर्यंकसयनं चिरविरह
तापहरः ॥ इति वचनात् ॥ या भांति पालनामें मानी
दिक लीलामें मानमोचनहूं करत हैं ॥ तातें श्रीगुसां
ईजी कहे हैं ॥ माननी मान हरणं पालनो पर सुपेदी
तीन तापर चादरि बिछावत हैं जो चेंकी सुपेदी श्री
यमुनाजीके भावतें तापें ऊपरकी सुपेदी कुमारि
काके श्रीचंद्रावलीजीके भावतें ॥ ताके ऊपरकी सु
पेदी कुमारिकाके भावतें ॥ ताके ऊपरकी चादरि श्री
स्वामिनीजीके हृदयके भावतें ॥ याही प्रकारसें पा
लनेहूं तीनो सुपेदी एक चादरि बिछावनी ॥ तकिया
धरीये ॥ झारी पास पडगी पर धरीये ॥ पालनाके मा

गकी सांमिग्री पालनाके नीचे गादी आगे धरीये ॥ ए
क बखसों ढांकिके बेसनकी पपडी कटोरा एकमें कब
हूं पपडीमें लोंन लगाईये ॥ कबहू सेव बेसनकी कचोरी
एकमें वाकी कचोरी एक ॥ इतनो भोग आवश्य धरीये
॥ बेसनकी पपडी श्रीस्वामिनीजीके कपोलके भावतें
बेसनके सेव श्रीस्वामिनीजीके अधर तथा ओष्ठके
भावतें ॥ भाषन मिश्री स्वामिनीजीके अधरामृत ॥ मे
वामें खारो जूथपति श्रीस्वामिनीजीके भावतें ॥ या प्रका
र जहांतांई राजभोगकी सांमिग्री सिद्ध न होइ तहांतांई
श्रीठाकुरजी पालनें पर झूलें ॥ खिलोंनां रूप ब्रजभक्त
जानके इन श्रीस्वामिनीजीको गांन ॥ फिरकी श्रीचंद्रा
वलीजीको स्वरूप है ॥ पपीहा कुमारिकाको गांन ॥ इन प
रभांतिभांतिके रंगसों नांतिनांतिकी सांड ॥ जे दू भक्त
नके भावतें श्रीठाकुरजी नृत्य करत हैं ॥ चटकनां दोइ झू
लफुंदडी झूमत हैं चकई भक्त जालत हैं ॥ तब प्रभु नेत्रनकी
कटाक्षरूपी डोरीसों पकरि भक्तनकों पास खेंचि खिः